

५

गुरुर्त्तचि

नाम

जीगरीश्वरमः ॥ गौरीश्वरः केतकपत्रभङ्गुमातृहस्तेन ददन्तु रवाग्ने
 विष्णुं गुरुर्त्तकस्ति द्वितीयदन्तप्ररोहो हरतु द्विपास्यः ॥ ११ ॥ क्रियाकलापप्र
 तिपत्तिहेतुं संक्षिप्तसारार्थविज्ज्ञाशार्मम् अनन्तदेवज्ञमुत्तरामो मु
 हूर्त्तचिन्नाम शिमातनोति ॥ १२ ॥ तिथीशावह्निः १ को २ गौरी ३ गरीश्वरः ४
 ५ हि ५ गुरुहो ६ रविः ७ ॥ शिवो दुर्जनैको १० विश्वेश्वरः १२ कामः १३ शिवः १४ ॥ ११ ॥
 शशी १५

॥ ११ ॥

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|--------|---------|------|----------|------|--------|------|------|--------|-----|---------|---------|------|------|-----|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ |
| अग्निः | ब्रह्मा | गौरी | गरीश्वरः | सर्व | शक्तिः | रविः | शिवः | दुर्जी | यमः | विष्णुः | विष्णुः | कामः | शिवः | शशी | वि |

नन्दाच नन्दाच जयाचरिका पूर्यति तिथ्योः शुभमध्यशस्ताः ॥ शितेः शि
 ने शस्तसमाधमाः स्युः शितस्तमो मार्किगुरौ च सिद्धाः ॥ १५ ॥ नन्दा नन्दा

सुहृत्
चिन्ता
महिम्ना

घृत् १८५५

मने तव स्य म् ॥ ८ ॥ भादे च न्द्र ईशो नमस्य नैलने त्रैमाध वे द्वादशी पौ
षे वेदशरा ४।५ द्रुषे दशशिवा १९१ मार्गदि ९ नागाद मधौ ॥ जोले
छौ ८ चोभयपक्षगाश्च तिथयः शान्पावुधैः कीर्तिताः ॥ ७ ॥ उर्जीवा
ढतपस्य शुक्रैतपसां कृत्स्नैरां गौर्ध्रयः ॥ १० ॥ शक्रः पंचसिते प्रा
क्राव्यग्नि विश्वरसाः क्रमात् ॥ तथानिन्यं शुभे सार्धं द्वादश्यां

॥२॥

| सू | चं | मं | बु | वृ | शु | श | वारेबु |
|----|----|----|----|----|----|----|----------|
| १२ | ११ | ५ | ३ | ६ | ८ | ७ | दग्धाः |
| ४ | ६ | ७ | २ | ८ | ७ | ७ | विषाखाः |
| १२ | ६ | ७ | ८ | ८ | १० | ११ | दुताशानः |
| म | वि | आ | मू | कृ | रो | ह | यमवशाकाः |

वैश्वमादिमै ॥ ११ ॥ अनुरा ॥ २ ॥
धादितीयायां पंचम्यां पि
तभंतथा ॥ अतएस्यां
तृतीयायां मेकादश्यां
चरोदित्ती ॥ १२ ॥ स्वाती

नन्दिकारव्याजपाचरिताभद्रापूर्णासंसाधमाकर्ता ॥ पाम्यंत्वायं वैश्व
देवं धनिष्ठार्यमरां ज्येष्ठान्तरवेदं धर्मं स्यात् ॥ ५ ॥ षष्ठ्यादिति यपो
मन्दादिलोमं प्रतिपद्यते ॥ सप्तम्यर्कः धमाः षष्ठ्याः धामांश्चरद
धावने ॥ ६ ॥ षष्ठ्याष्टमीभूतविधुक्षयेषु नोसेवेतनास्तैलपलेचुररतं ॥
नाभ्यंजनं विश्वदशभुजैर्दिके रतिथौ धात्रीपूजेः स्नानममादिजोष्य
सप्तः ॥ ११ ॥ ७ ॥ सूर्यशपंचाग्निरसाद्यनन्दावेदांगसप्ताश्वि
गजां कशौचाः ॥ सूर्याङ्ग सप्ताग्निरादिगीशादग्धाविरवारव्या
श्वहुताशानाश्व ॥ ८ ॥ सूर्यादिवारेति यपो भवन्ति मन्वाविशा
माशिवमूलवन्ति ॥ ९ ॥ कामं करोकाद्यमवन्तकाश्च शुभेविवर्ज्याग

कुर्तोचो
नामि
सा०

| | | | | | | | | | | | | | |
|--|------|----|----|----|------|-------|---------|------|--------|-------|--------|-------|----------|
| वे | ज्ये | आ | आ | भा | कु | का | मा | पो | मा | फा | शान्य | शान्य | नमा |
| अ | चि | उ | वा | रू | शत | रू | मा | ह | मृ | अ | अ | ने | तारामा |
| रा | स्वा | पु | थ | अ० | २० | म | म | वि | ह | न | ज्ये | सेषु | मध्यदेशे |
| वे | ज्ये | आ | आ | भा | कु | का | अ | पो | मा | फा | मासेषु | नि नद | विषेण्यो |
| कु | मा | कष | मि | ने | कन्य | वस्ति | त | धनुः | कर्क | म | म | तिह | शान्य |
| प | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | तिथि | ॥१८॥ | प | व | ध | का | निल |
| ह | म | अ | अन | उष | २ | रोहि | नक्षत्र | मास | शान्या | श्वरा | शायः | ॥गो३ | गनाजि |
| र | च | म | उ | व | श | श | वा | रेष | माल | वयो | त्त्या | ज्या | अन्यदेशे |
| नगर्हिताः ॥१९॥ वर्जयेत्सर्वकार्येषु हस्तार्कपंचमीति च ॥ भौमा | | | | | | | | | | | | | |

॥३॥

3

चित्रे त्रयोदश्यां सप्तम्यां हस्तराक्षसे ॥ नवम्यां कृत्तिका षट्म्यां पूभा
 षष्ठ्यां च रोहिणी ॥ १३ ॥ कदास्त्रभेत्वाष्ट्रवायु विश्वेज्यो भगवात्स
 को ॥ वैश्वश्रुती पाशिपोसे अजपादग्नि पितृभे ॥ १४ ॥ त्वाष्ट्र
 दौ श्रो शिवा श्रव्यर्काः श्रुतिमूले यमेन्द्रभे ॥ चैत्रादिमासे शून्या
 रण्यात्तारा वित्तविनाशदाः ॥ १५ ॥ धटौ भूयो गौर्मिथुनं मेघक
 म्यालितौ लिनः ॥ धनुः कर्को मृगः सिंहश्चैत्रादौ शून्यराश
 यः ॥ १६ ॥ पञ्चादितत्त्वोजतिथौ धटौ मृगेन्द्रनक्षौ मि
 थुनांगरोच ॥ चापेन्द्रमेकहरीहयान्त्यौ गोन्यौ चनेष्टे
 तिथि शून्यलग्ने ॥ १७ ॥ नारदः ॥ तिथयो मास शून्याश्च

ग्रहर्त
चिंता०

मणि०

४

॥४॥

॥५॥

॥६॥

॥७॥



लेमू १ द्वेदे रलो मत्पू त्यात का लाक्ष सर्वे ॥२२॥ सूर्य भा दे द ४ गो ले त र्क ६ दि ग्वि १
श्व १३ २ सं मिते ॥ चन्द्र र वि योगाः स्युर्दोष सं व वि नाश काः ॥२३॥
सूर्यः कर्म लो त र प्र प्य दा स च न्दे श्रु ति ब्रा ह्म श शी ज्य मै त्र ॥ भो मेः श्व हि
उ ॥ धृ त शानु सा ण्य ते ब्रा ह्म मै त्रार्क क शानु चा न्द्र म् ॥२४॥ जी वे न्त्य मै त्रार व्य दि तो
ज्यं धि द्यं शु क्रेः न्त्य मै त्रार व्य दि ति श्र वो भ म् ॥ श नौ श्रु ति ब्रा ह्म स मी
र भा नि सर्वा र्थ सि द्धौ कृ पि ता नि पू र्वैः ॥२५॥ द्वा शो तो या दा स वा त्यो म् भा च ॥२६॥
ब्रा ह्म्या तु ध्या द र्प म ही च त्रु भैः ॥२७॥ त्या ता र व्यो म् तु का शो च सि दि वि र्क
चे त त्फ लं ना म तु ल्य म् ॥२८॥ कु यो गा ति पि वा रो त्या ति पि भो त्या भ वा र जाः
॥२९॥ ले वं ग र व शो व व र्ग्या त्रि त प जा त्ता था ॥३०॥ सर्व सि नि धु पा प यु क्त व
ल वा व र्ध नि शान् हो धं टी अं शं वै कु न वां श कं ग र हा तः पू र्व दि ना नां त्र य ॥३१॥
ग्र ह तोः ग्र हा नि शु भ दो त्या ते श्च दु र्घ दि नं घ रा मा सा न् ग्र ह भि न्न भं त्य ज शु भे
ग्र ह र्त्तं सक ला र्थ पा द ग्रा से क्र मा त र्क गु र

श्व ३

श्व ४

॥४॥

[illegible]

मु० वि०

५॥

द्वि० षट्कुंजरां च कार्त्तिका १२ विश्व १३ पुरन्दरा १४ नीतिश्रुतेष्व २५ षष्ठि ३
 तर्कादिशः १०॥ सौम्येष्व २ द्वि० गजैक दि० १० जतनु १४ मिताजीवेदि २ षट्कुं
 भास्वराः १२॥ शक्रारव्या १४ स्थिरपः कलाश्च १६ भृगु जेवेदे ४ षु ५ तर्कादिज्जहा ६

| व | च | म | व | ज | श | श |
|----|----|----|----|----|----|----|
| ६ | ४ | २ | २ | २ | ४ | १ |
| ७ | ६ | ४ | ४ | ६ | ५ | २ |
| ८ | ८ | ३ | ८ | १२ | ६ | ८ |
| १० | ८ | ६ | ८ | १४ | ८ | १० |
| १४ | १२ | १० | १० | १५ | १० | ११ |
| ०० | १३ | ०० | १४ | १६ | १३ | १२ |
| १४ | | | | १२ | | |

॥ ३८ ॥ दि० भास्वरा नैमनु १४ मिताश्च शनौशशि १० दि० २
 जागाट दि० शो १० भव ११ दि० वाक १२ सम्मितांश्च ॥ ५ ॥
 दुष्ट जरात कुलिक कला कालवेलाः १० स्पु १ श्वार्दु
 पाम पमबराट जाता पू कलां शाः ॥ ३८ ॥ विद्याशैराव

रोन्दुमासान् ॥ पूर्वपरस्तादुभयोस्त्रिंशज्जस्रेऽस्तगेचाभ्युदितेर्द्धखरोऽ
 ॥३३॥ जन्मर्जमासतिथयो व्यातपातभद्रावैधृत्यमापित्तादिजनितितिथिनाप
 र्द्धि ॥ परिबार्द्धपञ्चश्लेषउद्गराप्रतिगरापोः ॥ व्याघातेर्नवनाप्रश्ववर्ज्या सर्वेषु
 कर्मसु ॥ वेदां ४ गाः ८ नवार्के १२ द्वा ४ पक्षान् प्रतिधौत्यजेत् ॥ वंशं ८ क
 मनु १४ तत्प्रा २५ शाः १० शराः ५ नास्त्रपरः शुभात् ३६ दार्क ५ २५ १० ५
 कुम्भिकः के लवेत्ता च पमवराट् स्वकाराठक ॥ वाने दिव्ये क्रमान्मन्ये बुधे
 जीवे कुजे जराः ३९ सूर्ये षट् ६ त्व ३ नाग ८ दिग्म १० नु १४ मिता च न्ये

मु० वि०

नाम

नाम न्यासिहरी३

पञ्चपञ्चरदि ७ कृता ६ छन्द नाम ३ रस ६ भू १ यामादिवद्यः शरा निष्ठे गायत्र्यमशैद्ध जेन्दु ॥ १

नस ६ नामा ३ घृ ७ शिव वाराणा पञ्चि ४ बु ॥ याम्ये खन्तवटी त्रयं शुभक नीपुद तथा नासने
विधि स्तिथ्यपनार्द्ध जा शुभक नीरा त्रैतु पूर्वार्द्ध जाः ॥ ४४ ॥ कुम्भकर्मोत्पत्तिर्त्ये स्वर्गे

॥ ६ ॥

६

जिजात्र बुद्धिप्रेत स्त्री ६ धनुर्पूर्व १ तक्रो ५ चोभद्राय त्रैवत त्यलम् ॥ ४५ ॥ वाप्या

तुला २

॥ ६ ॥

प्रपद प्रथमद
पौषा नक्षत्र
उपक्रमेण
नेष्टः १

नामत गङ्गूप भव ना नभ प्रतिष्ठ तत्र भो सर्ज बधू प्रवेशनमहादौ नानि

सोमाष्टकं ॥ जोदौ नैजप्रेरा प्रपा प्रथम कोपा कर्म वेद व्रतानी तलो द्वाहम

धाविपन्न शिशु संस्कारान् सुनस्थापनम् ॥ ४६ ॥

४ ॥ ८ ॥ ११ ॥ १५ ॥ ३ ॥ ७ ॥ १० ॥ १४ ॥ १८ ॥ २२ ॥ २६ ॥ ३० ॥ ३४ ॥ ३८ ॥ ४२ ॥ ४६ ॥ ५० ॥ ५४ ॥ ५८ ॥ ६२ ॥ ६६ ॥ ७० ॥ ७४ ॥ ७८ ॥ ८२ ॥ ८६ ॥ ९० ॥ ९४ ॥ ९८ ॥ १०० ॥

लोमोपलः २
शुद्धि वृद्धिः
जोदौ न
दोहा वृद्धिः
वे २
अग्रपरा
माधित्यपरा
विदेशो अशुभ
सम्पत्तस्य संस्कारः ॥ ११

तीतीवेशतव्यश्चत्रिपुष्कत्रे॥ विवाहादिप्रभेनेष्टं होत्रिकाप्राग्दिनाष्टकं॥४०॥
 मत्पुत्रकचदधादीनिदौशस्ते सुभांजगुह॥ केचित्प्राप्तामोतत्रं चान्ये
 पात्रापांमेवनिन्दितान्॥४१॥ अथोत्रे सुयोगोपि चेत्स्यात्तदानीमयोगंनि
 हंत्येकसिद्धितनोति॥ पनेत्यज्जशुध्याकुपोगादिनाशंदिनाद्धीतत्रंविष्टि
 पूर्ववत्संस्तम्॥४२॥ शुक्ले पूर्वार्द्धेष्टमीपंचदशोर्माद्रिकादश्यां चतुर्थीपत्रा
 र्द्धे॥ कृष्णेन्यार्द्धे स्यात्तृतीयादशम्योत्पूर्वभागे सप्तमीसंभुतिथ्याः॥४३॥

साहस्यमासमन्त्रिणां चोक्तं वक्तुं न शक्यते ॥ वक्तुं न शक्यते ॥ वक्तुं न शक्यते ॥

दीक्षामौज्जीविवाहसुरासुमपूवंदेवतीर्थेक्षुरो संन्यासाग्निपनिग्नहोत्प
 ति संदशभिषेकौ गमम् ॥ चातुर्मास्यसमावृत्तीप्रवराद्योर्वेधंपरीक्षां त्य
 जेत् ॥ वृद्धत्वास्त्वशिशुत्वईज्यशितपोन्यूनजाधिमासे तथा ॥ ४७ ॥ अस्ते
 वर्ज्यसिंहनक्रस्थजीवेवर्ज्यकेचिद्वक्रगेचातिचात्रे ॥ गुर्वादिभ्येविबस्त्रे
 पिपजेप्रोबुस्तद्वदन्तरन्नादिभूषणम् ॥ ४८ ॥ सिंहगुत्रे सिंहलवेविवाहो
 नेच्छोथगोदोतत्रतश्चयावत् ॥ भागीरथीयाम्यतरंचदोषो नान्यत्र
 देशे तपनोपि मेघे ॥ ४९ ॥ मन्वादिपञ्चपादेषु रू५ सर्वत्र निन्दितः ॥ गंगा
 गोदान्तनं हत्वा शेषां विषुनो दावभाक् ॥ ५० ॥ मेघेऽर्के शुभो द्वाहो गंगागो

परीक्षा
क्रिया

श्व

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|----|----|---|---|----|---|---|---|---|----|---|------|---|----|---|---|---|---|---|----|----|
| अ | भ | स | न | म | पु | पु | अ | म | प | उ | ह | च | स | वि | अ | ज्ये | म | प | उ | अ | ध | श | प | उ | ने |
| न | प | अ | व | च | नु | दि | ग | स | पि | म | अ | स | ल | व | श | मि | ज | वि | अ | ध | श | प | उ | ने | |
| म | प | अ | व | च | नु | दि | ग | स | पि | म | अ | स | ल | व | श | मि | ज | वि | अ | ध | श | प | उ | ने | |
| म | प | अ | व | च | नु | दि | ग | स | पि | म | अ | स | ल | व | श | मि | ज | वि | अ | ध | श | प | उ | ने | |

पाजचरणाहिर्वुधूपसाभिधाः॥१॥ उत्तरात्रप्ररोहिरापोभास्करश्चध्रुवंस्थितं॥
 तत्रैस्थिरम्बी जर्गहशान्त्यानामादिसिद्धये॥२॥ स्वात्यादि तेषुतेस्त्रीरीचंद्र
 श्चापि चरंचलं॥ तस्मिन् गजादिकारोहोवाटिकागमनादिकम्॥३॥ पूर्वोत्रयं
 याम्यमवेउजंक्नंकुजस्तथा॥ तस्मिन् बाताग्निशब्दानिविषशास्त्रादिसि
 द्ध्यति॥४॥ विशाखाग्नेयमेसौम्योमिश्रंशाधारंस्तुतं॥ तत्राग्निकार्यं
 मिश्रं चक्षुषोत्सर्गादिसिद्धये॥५॥ हस्ताश्विपुष्याऽभिजितः दीप्यन्तबुगुरु

॥८॥

॥८॥

शतभिषा

॥६॥

शो नृशं गंशयोः शुभमसत्सर्वशिके प्रांततः ॥११॥ विप्राजया तयो द्रोहो राजा प्री
त्यार्पितं च यत् ॥ नित्योर्पि विस्मै वारादौ बसंधार्यं जगुर्बुधाः ॥१२॥ राधाम्
लम्बुध्रुवर्तवस्सुरादिपैर्ध्वंतापरिघोऽथोत्पदं दर्शनं ध्रुवमदुक्षिप्रप्र
बोवासवे ॥ तीक्ष्णोऽनाम्बुपभेषु मघसु दितं क्षिप्रान्त्या वन्ती नुभादित्ये

| | | | | | | |
|--------|----------|-------|----------|----------|---------|------------|
| ध्रुवं | चरं | उग्रं | मिश्रं | लघु | मृदु | तीक्ष्णं |
| स्थिरं | चलं | क्षरं | साध्या | क्षिप्रं | मैत्रं | दाहुरा |
| र | च | मं | बु | व | श | श |
| उफा | स्वाती | पुफा | कान्तिका | हस्ता | मृग | मूल |
| उषा | पुनर्वसु | पुषा | विशाखा | अश्लेषा | चित्रा | ज्येष्ठा |
| उभा | श्रवणा | पुभा | घा | पुष्य | अनुरा | आर्द्रा |
| त्रोहि | धनिष्ठा | भरणी | अभिजित् | श्रवणा | मृगशिरा | पूर्वाषाढा |
| | शतभिषा | पुष्य | मिथुना | मेथुना | मिथुना | मिथुना |

न्द्राम्बुपबासवेषु हि गवांशस्तः
ऋषो विक्रयः ॥१३॥ वज्रेशुभे चा
मशुद्धि संपुतेरक्षार्पणं निज
योनिभे चरेता नितायमीदर्श
कुजश्रवो ध्रुववाद्ये घुपानं स्थि

स्तथा तस्मिन्प्राप्य रतिज्ञानं भूषाशिल्पकलादिकं ॥ ६ ॥ गान्ध्या च त्रामित्रार्जु
 नदुर्गैत्रं भृगुस्तथा ॥ तत्र गीताम्बुत्रं क्रीडा मित्रकार्यं विभूषणम् ॥ मूलेन्द्राद्राहि
 मं सौरीस्तीक्ष्णादारुणा संज्ञकम् ॥ तत्राभिचार वातोऽत्र भेदाः ष सुदमादिकम् ॥ ८ ॥
 मूलाहिमिन्द्रात्र मध्वो मुखं भवेदूर्ध्वं स्पर्मार्दे ज्यहरित्रयं ध्रुवम् ॥ ९ ॥ तिर्य्य
 घ्रुखं मैत्रकरानित्यादिति ज्येष्ठाशिवभानि दशकृत्य भेषु सत् ॥ १० ॥ पौष्ण
 ध्रुवाशिवकरपञ्चकवासवे ज्यादित्ये प्रवालरदशं स्वसुवर्णं वस्त्रम् ॥ धार्य्य
 विनिर्क्तशानि चद्रकुजे निरुक्तं भौमे ध्रुवादिति पुणेशु भगानन्दघात ॥ १० ॥
 वस्त्राणां नवभाग केषु च चतुःकोशोऽमनाराज्ञसामर्थ्यं त्र्यंशगता नरास्तु स
 दसैपार्श्वे च मध्यांशयोः ॥ दग्धे वा स्फूर्तिर्नृन्वरे नवतरेपदिलिपे न स द्दत्ते

| | | | |
|---|----|----|----|
| ६ | १० | १० | १० |
| ७ | १० | १० | १० |
| ८ | १० | १० | १० |

पितृदिनं न विजज्ञेयुर्कार्यं कदाचित् २० सधाप्याः कुलैव तस्य स्वतन्त्रं
 कोऽर्थः हस्त २ वीन्दुसोरे कोऽर्थः इन्दुसोरे रिति

CC-0. Lal Bahadur Sanskrit University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

अनिलवशुक्रावधौ ७

८ त्यां हि बुद्धेऽशुभौ सन्नुत्प्लेशो ज्ञेयः शौ शुभः स २५ क्षिप्रमेव

सौविीसताकेज्यवापेसोमिचगनेऽके कुजेवारव१०॥नामे॥योने

मैत्र्यांशोऽप्येवमेषां सैवकेनः २६ स्वात्मा

दित्यम् दधिदैवगुणभेदार्त्ताप्राश्वेचरेलगुणेधर्मिसुतापद्य

सशुद्धिं सहितेन्द्रियप्रयोजः शुभा नारेण रात्रमृणां तु संक्रमदिने वडौ

त्रैलोक्येऽर्के निरूपितं शेषं भवेद्दृष्टां न च नुपदेयं कदाचिद् नमः १७ मूल

दीशमवाचन ध्रुवमदुक्षिप्रैर्विनाशं पापैर्हनिवतैर्विधौ मांशले ॥ लग्ने देव

गुणै ह्यप्रवृत्तं न शस्तं न हि ब्रह्म कदा जस्य च दृष्टं नाति न हि प्रवृत्तं ता
तथाश्च स एव वशुनि वा सुखादिती विशाद्यो निभौ मविना। बीजौ पिर्जादितौ भूमात्व

CC-0. Lal Bahadur Sanskrit University, Delhi. Digitized by Sarvagya Shastri and Peetham.

CC-0. Lal Bahadur Sanskrit University, Delhi, Digitized by Sarvagya Shrivastava Pratham

शुद्धेयि-या ३

गो म आ य
म अ इ ए ओ
उ श ष स ह ल

99

११

वि४

नक्षत्रानां शिवपुत्रोऽविनिर्जितेशुक्ते जाके न्हि मेत्र ध्रुवसुसहितादि सशाक्रादिदेवे ॥
 सुखीत्योहिरिथ्यारव्यशशिनिसुभदछे शुभैः केन्द्रैः स्यात्स्यगः शय्यासनादेर्ध्रुव
 म्दुलबुहर्ष्येनकादित्ये इच्छ ॥ २२ ॥ अन्धा दानसुपुष्यधातुजलमंदीशान्त्यभास्य
 म्नामं मन्दा दानं विश्वमेत्र जलपक्ष्मेषां शिवचान्द्रं भवेत् ॥ २३ ॥ मध्या दानं शिवपि
 त्रैकैकचरणा त्वाछे न्दीच ध्वजकं स्वदं स्वादिति श्वबोदरुत भारिर्बुध्वन दोभगम ॥ २४ ॥
 विनष्टार्थस्पर्शभोऽन्धोशीघ्रं मन्दे प्रयत्नतः ॥ स्याद्दूरे अवरां मध्येऽनुत्पाप्नीर्न सुले
 चने ॥ २५ ॥ तीक्ष्णामिष्ट्रध्रुवैरेष्येद्रव्यदत्तं निवेशितम् ॥ प्रपुक्तज्ववि नष्ट ज्ववि
 द्वापाते च नाप्यते ॥ २६ ॥ मित्रार्क ध्रुववासवम्वपम वातोपांत्यपुष्येन्दुभिः पापेर्हनिवृत्ते
 सततौ सुरगुणैर्ज्ञेवाभृजौ खेदिजौ ॥ आप्ये सर्वजलाशयस्य खेननं व्यभोमवैः सेन्दुमैः

मह

५३

दिताधुवेन्यशेषदस्रचरभेषुचध्या न्यवृद्धिः॥३३॥ क्षिप्रधुवान्त्यचरमि
चमवासुशसंस्यान्कानिकंसहचमंगलपौष्टिकाभ्याम्॥ रे१५केविधोसुरवग
तो४तनु१जैत्रो० नोमोख्यादिदुष्टसमपेशुभटंनिमित्ते॥३४॥ सूर्यभात्रितमेच

१२ न्देसूर्यविक्रपंगवः॥ चन्द्रात्रेज्यागुसिखिनोनेष्टाहोमाहुतिःखलेः॥३५॥

सैनातिथिर्वरिपुताकृताप्रा४शेषेगुर्नैमे३० भुविनीलवासः॥ सौख्यायहोमेश

१२ शिपुगमशेषेप्रारार्थनासौदिविभूतलेच॥३६॥ नावान्नस्याच्चक्षिप्रमिदुमे

शत नौशुभं॥ विनाजन्दाविषवर्दिमधुपौषार्किभूमिजोत्॥३७॥ पात्रेच

होमे अग्निचक्रं सूर्यभादिनमवात यविशारेवेन्द्रसार्पिष्योसमिन्न

स्तुत्य बुध शुक्र शनि बंद्रभौमगुरु राहु केतु मे॥ भुग्वीज्यार्कदिने नौकावृद्ध

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|

१२

१२०

[illegible]

५५५५

वेधा॥६१॥११॥लग्नेगेशुमहगुप्ते॥चन्द्रेत्रि३षट्दशांयस्थे११सर्वोयंभः
 प्रसिध्यति॥४४॥स्वातीन्दुपूर्वाश्लेषवस्यार्पमेम्यतिज्वरेत्पमेत्रेस्थि
 यताभवेदुजः॥याम्यज्ज्वीवारुरातद्भमेशिवा११वस्त्राहिपक्षौ१५
 विशाखा॥ध्विषर्कवासवे॥४५॥मूलाग्निदास्रतवर्षिन्मभेनख२०व
 ध्वार्यमेज्यादितिधातुभेनगा७॥मासौ१२ज्वैश्वेयपमाहिमे
 लभेमिस्त्रेसपिन्नेफ्रिदादंशनेम्यति॥४६॥रौद्राहिशक्राम्बुपया
 म्यपूर्वा३द्विदैववस्वग्निषुपापवात्रे॥रिक्ता४॥१४॥हन्त्रि१२स्व
 न्देहदिनेचरोगेशीघ्रंभवेद्रोगिजनस्यमृत्युः॥४७॥क्षिप्राहिमले

13

93

93

शुद्धि

गज

शुद्धि २

नंस चानो प्रमम ॥ ३८ ॥ मूलैर्द्रा भरणीपि त्र्ये म गे सोम्ये वटे तनौ ॥ सुखे ४ शुक्ले
 ५ छ मै सिद्धि वीरि चारयोः ॥ ३९ ॥ व्यंतादिति ध्रुवमवानिल सार्पाघीमे नि तो
 तिथो च प्रत नौ वि कै वीन्दु वात्रे ॥ एमानं रुजा विरी ह तस्य जनस्प स सं हो ने विधौ ख
 लख गै र्भ न्न ११ केन्द्र १ ॥ ४० ॥ को रो पा ॥ ४० ॥ मृदु ध्रुव चिप्र च रे ने गु रौ वा
 ख १० लज्ज १ गे ॥ विधौ ज जी व वर्गे स्थे शित्प विघा प्र शस्य ते ॥ ४१ ॥ मृगे ज्य मि
 त्र भा ग्येषु चो छ ८ म्या तै ले ह त्रौ ॥ १२ शुक्ले ६ छ ८ तनौ सोम्ये वारे सं ध्या ॥ ४२ ॥
 न मि ख्य ते ॥ ४३ ॥ त्य को छ ८ मृत १४ शनि वि वि ष्टि कु जान ज नु र्भ मा सो म तौ
 ट री व वि ध्रु य पि भानि ना द्यः ॥ धां गे च रे त नु ल व श शि जी व ता रा शु
 के क ना दिति ह नै न्द्र मे क पे प री क्षा ॥ ४३ ॥ व्यया १२ छ ८ शुद्धाय च

शुद्धि २

ति ४

ली ० रात ० बंद ० राप ०

धिमासोऽयतो॥ याम्येऽतत्परतश्चपातपरिवेदे वेज्यशुक्रास्तकेभ
 द्रावैधतयोः शत्रुप्रतिष्ठातेर्दाहो नपक्षे सिते॥५०॥ जन्म ११११११ प्रत्य
 रि ११४११३१ तारयोर्मिति - सुखा ४ नये १२० मेव कर्तुर्न स मध्ये मित्रभगा
 दिति ध्रुवविशाखाघां विभुं ज्ञेयि च॥ अथोऽर्के ज्यविधोर्दिने प्रतिकरः
 स्वात्पाश्विपुष्पे तथा त्वाशौचात्परतो विनाय मखिलं मध्य पथा संभ
 वम्॥५१॥ अमुक्त मूलं वृद्धिका चतुष्टयं ज्येष्ठा न्यमूलादि भवन्ना नदः
 ॥ वशिष्ठं स्कन्दिद्वार्यमितं जगौ बृहस्पतिस्त्वेक वृद्धिप्रमाणाकं म॥५२॥
 अथो चुरसोपाप्रथमाळवयो मूलस्य शक्रा निमपच नाष्टः॥ जातं
 शिशुं तपरित्यजेद्दामुखं पिंत्त्यष्ट - समानययेत्॥५३॥ आघोषिता
 नासमुपैति मूलं पादोदितं तीये जन्मसी तृतीये ११ धनं चतुर्थो स्थिशु

१४

हि ६

ता

३२

न्द्रह शीशवायुमेप्रेत क्रियास्याम्भुषकुं प्रवे विधौ १२।११॥ प्रेतस्यदा
 हंयमदिर्गमं त्यजेत् ॥ शय्यावितानं ज्येष्ठगोपनादि च ॥ ४८॥ सूर्यर्क्ष
 द्रसह मेत्रधः स्य लगतैः पाकोत्रसे संयुतः शीर्षे पुग्मरमितैः शव
 स्पदहनं मध्ये पुजे ॥ ४९॥ सर्पभीः प्रागाशादिषु वेदधर्मैः स्वसुहृदां स्यात्सं
 गमो रोगभीक्षाद्यादेठ्ठकरां शुखं च गदितं काळादि संस्थापनं ॥ ५०॥
 भन्दातिथी २।७।११२। नविजभूततपार्कचारिदीपापैमाजचररायि
 ति विनिवैश्वे ॥ त्रेपुष्क नो भवति मृत्युविनाशवद्धौ त्रेगुरापदो
 दिगुराकृद्धसुतद्वौ चान्द्र ॥ शुक्रा नार्किषु दर्भतमयते ३।४।१३।
 नन्द्यासु १।६।११। तीक्ष्णो जगमे पौष्मे वारुणामे त्रिपुष्करं दिने न्यूनं

गाम

७६

चक्रैर्धमबलं १० चमं च ११ शय्या १२ करो १३ मौक्ति १४ क विब्बु मं च १५ ॥ ५ ॥
 तोरसा १६ वलितिमं च १७ कुडल १८ सिंहपुच्छ १९ गजदन्त २० मं च काः २१
 सिच २२ त्रिचनरा २३ मर्दला २४ वृत्त २५ मं च क २६ धमा २७
 मर्दला २८ ॥ ५ ॥ अथ देवारा मजलाशयप्रतिष्ठा ॥ जलशय्या ग्रामस्य
 तिष्ठा सोम्या प्रने जीवशशाकशुक्ले ॥ दृश्ये मृदु क्षिप्रचरे ध्रुवे स्यात्पक्षे १५
 सिते स्वर्ने त्रिभिर्धनो च ॥ ६ ॥ पिता विजेत दिवसेति शस्तो शशाकपापे
 स्त्रि ३ भवौ हस्थे ॥ व्यष्टा ॥ १२ जैः सत्त्वचरे मृजेत्ये ५ सूर्यो वरे ११
 को १० युवतौ हच विष्णुः ६ १ ॥ शिवो नृपुण्ड्र इति तनौ च ३ ॥ १२ देव्यः
 शुद्धाश्च ११ १४ १७ १९ ॥ सर्वज्ञे स्थिते २ ॥ ५ ॥ ११ पुण्ये जगत्विषयपक्षसर्पे भू

१

अर्द्धदिनात् अर्द्धरात्रिः अर्द्धविंशतिः अधः ५६ त्रिंशत् प्रमितार्कसंख्या बोधा २

दिनद्वयं पुराणमथोदयास्तात् पूर्वपरस्तात् यदियाम्यसौ म्ये अयने दिने पूर्वपरे तु पुराणे
 संख्या त्रिंशत् प्रमितार्कविंशदितास्तादधः ५६ मत्र ॥ ८ चेद्याम्यसौ म्ये त्वयरो क्रमात्तः
 पुराणो न दानीं परपूर्ववत् ७ ॥ याम्यापरो विष्णुपदे चाप्या मध्यात्तु लाजयोः ॥ षडशीत्या
 नने सोम्ये पुराणादोऽतिपुराणदा ॥ ८ ॥ तथा परांशाः खरसा ॥ हता श्वस्य मर्कजत्या वि
 रुता दिनादौः ॥ मेषादितः प्राक् च लसंक्रमाः सुर्दाने जपादौ बहु पुराणदास्तौ ॥ ९ ॥ स
 ममदुत्तिप्रवसुश्चो ग्निमन्त्रा निपूर्वाश्च यमं बहत्स्यार ॥ धूर्वे हिरे वादिति मंजद्यन्यं १६
 साव्याम्बुपादौ नितशा क्रयाम्यम् १० जवन्यमे संक्रमरो नृहती शरेन्दो ११ वाराह
 ता बहत्सु ॥ खरा मसंख्याः ३० सम १३ शीत्या नने विषवत् विष्णुपदे सोम्यापन
 मे महर्षे समर्च साम्यं विधुदर्शने पि ॥ धनमिषु न तुला सिह वस्थि क मकर
 कन्या मौन मेष वृष कुंभ चक्र ॥ ११ ॥ अर्क दिवारे संक्रान्तौ कर्कसा ब विंशो ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥
 ५६ रात्रि पूर्वयदियाम्यायने तदा पूर्वदिने पुराणम् ॥ १० ॥ नीचनी
 अस्तात् परस्तात् यदिसौ म्यायने तदा परदिने पुराणम् ॥ ११ ॥ पीपनी

१६

१६

तादयो न्त्ये श्रवणो जिमश्च ६ इति श्रीदेवज्ञाननसुतदेवज्ञानमविरचिते सुहृत्तन्त्रिना
 मरुतौ नत्तत्र प्रकरणम् समाप्तम् २ अथ संक्रान्तिप्रकरणम् चोद्यार्कसंक्रमणमुच्यते
 एवो हि श्रद्धान्धांती विशोलबुविधौ च चरत्तभौमे ॥ चोरान्महोदरयुता न्यतीन्
 तमेत्रे मन्दाकिनी स्थिरगुरो सुखये च मन्दा १ विप्राश्च मिश्रभभगौ तु पशंश्च मि
 श्रातीक्ष्णार्कजे न्यजमुखान् खलुरात्तसीच अंशे दिनस्य न्यपतीन् प्रथमे नि
 हन्ति मध्ये द्विजाने पिविशो परके च श्रद्धान् २ अ १ स्ते निशा प्रहरकेषु पिशा
 चकादीन् नक्तं चरानि पिनयान्यशुपालकादीन् सूर्योदये सकले विंशतिन
 च सौम्यपाम्पायनं मकरकर्कटयोर्निरुक्तम् ३ षडशोत्पाननं चापन्युग्न
 कन्या भूषाभवेत् तुलाजो विषवद्विष्टः पदसिंहालिगो बटे ४ संक्रान्तिका
 लादुभयत्र नादिकाः पुरापामताः षोडशो षोडशो षडशोः निशीपतो र्वाग
 परत्र संक्रमे पूर्वपराहानि मपूर्वभागयोः ५ पूर्णो निशीपे यदि संक्रमः स्या

बहुमान जद्विष्यमान

CC-0. Lal Bahadur Sanskrit University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

Digitized by Google

ethan

पकाः॥ दिसो १॥ नखा २॥ गजाः ३॥ सूयो ४॥ चत्थो ५॥ षष्ठादश सायका ॥ १३॥ स्यात्तैतिले
 नागचतुष्पदेन विः सुप्ता निविष्ट सुगतादिपञ्चके॥ विसुधु उर्ध्वशुनौ सकौलवेने
 यः समः शेष इहार्धवर्षते ॥ १३॥ सिंहव्याघ्रवराहरासभगजावाहा द्विषत्घोटकाश्वा
 ओजोश्चरसायुधश्च ववतो वाहान्वे संक्रमे ॥ वसुं खेतसु पीतहा प्रीतकपांडुरत्तका
 लोसितं चित्रं कम्बलादिग्व नाभमथशुस्र मुशुं डीगदा ॥ १४॥ षडुदं उशरा
 सतोमनमथोकुलश्च पाशाः कुशोऽसुं वरां त्वथ भक्ष्यमन्नेपत्राम न्नै मेक्ष्यपका
 न्नकम् ॥ दुग्धं दध्यापि चित्रता न्नगुडमध्वा ज्येतथा शर्करा ११ थोलेयो मज्जा
 नाभिकुंकुमथोपाठीरमद्रोचनं १५॥ यावश्चोतंदौ निशां जनमयो काला गुरुश्चंद्रो
 जातिदेवतभूतसर्पविहगाः पश्वेना विप्रास्ततः॥ दोत्री वैस्यकशुद्रसंकरभवाः पुष्य
 च पुन्या गवं जातिर्वीकुलकैतकानि च तथा विः ल्वार्कदूर्वा म्वुजम् ॥ १६॥ स्यान्महि

नंततोंगमे॥ सुखं त्रिभेपीऽनमऽमेऽशुखं त्रिभेऽर्थहानिः यस्येधनागमः॥ १८॥ न
 पेक्षरांसर्वकृतिश्च संग्रंशाखं विवाहेण मदीक्षरोत्रेवः॥ वीर्येयतानावलः तौ विधु
 विधोर्वलेकोर्बलेकुजादयः॥ १९॥ स्पष्टार्कसंक्रान्तिविहीनऽनोतासाधि
 मासः क्षयमासकस्तु हि संक्रमस्तत्र विभाज्योस्तुतिः योहि मासोपथमान्यसंज्ञो॥
 २०॥ इति श्रीदेवज्ञाननसुतदेवज्ञानविप्रश्च तेमुहूर्तचिन्तामणौ संक्रान्ति
 प्रकराख्ये ३॥ अथ गोचरप्रकरणम्॥ सूर्योत्पत्त्यन्त्ये १२ ख १० युगे ४५ न ३ तन्दे ६
 शिवा ११ नोपो ५ भौमशतीतमश्चरसा ६६ पौर्णमासी ११ श्रेणरादिन्त्ये १२ चन्दो ५ च्वरा ११
 ध्रौ ४ गुरा ३०

| | | | |
|----------|---------|--------|-------|
| सप्त | मानिमा | उद्ध | मन्वि |
| चतुर्ष्व | गरव | किस्तु | ह्यु |
| नानिच | निज्ञान | वश | पुअ |
| नाग | दावव | कुन | धप्र |

श्रीकृष्ण

तन्देपोखलोभा ११ छमेच चघ १ स
 त्रेपरसा ६ न्त्ये १२ नैग ६ पे २ सोदि २
 श्रेण ५ ध्वि ४ नामैत्रसा ६ ५० योताग ८
 विधौ १ ख १० नोपो ८ ला ५१ ११ यये १३
 देवगुरुः शराध्रौ २॥ २॥ न्त्ये नवसे १०

राशेः फलदा पुनस्तात ॥ १८ ॥ दुष्टयोगे हेम चन्द्रे च शंखं वा न्यतिथ्यर्धे तिथौ ताराङ्गं च ॥

वात्रे न लम्बे च गं हेमना प्राग्दद्यात्सिं धूतं च तारासुराजा ॥ १९ ॥ राश्यादिगोत्राविकुं ज्योतिष

त्यदौ सते ज्यो मध्ये सदा शशिसुतश्च रमे नमन्दौ ॥ २० ॥ अथ सन्मति ४ वस्त्रं प

सौरव्यं दुस्त्वानि ० प्राप्तिर्जनि मेरा विवासादी ॥ २० ॥ इति श्री दैवज्ञेन नसुत दैवज्ञा नाम

विनचिते मुहूर्तचिन्तामणौ गोचरप्रकरणम् ॥ चतुर्थम् ॥ ४ ॥ अथ संस्कारप्रकरणम् ॥ अ

थं न जः शुभं मो विमार्गना ॥ धेयु फलान्ते ॥ ज्येष्ठश्रावणयोः शुक्ले सप्तम्यासतनो दिवो ॥ १ ॥

शुक्रश्रुतित्रयमद्विप्रधुवस्वालो सितो मय ॥ मध्यं च मूलात्वादिती मो पीतामि श्रेयजेष्व

हस्तये सत् ॥ २ ॥ मद्रा निद्रा संक्रमे दर्शिता संध्या षष्ठी ६ द्वादशी १२ वैश्वतेषु रेखा षट्म्या च द्वा

सूर्योपगणे पाते चाघं नोर जो दर्शनं सत् ॥ ३ ॥ अथ रजो दर्शनात् ॥ हस्तानि त्राश्वि मृग

मेत्रवसुधुवास्वोः शक्रान्विते शुभं तिथौ शुभवासने च ॥ स्नायादधानं वती मृगयोस्त

हस्तानि त्राश्वि मृगयोस्त ॥ गंडानां त्रिविधं

19

॥ १८ ॥

शुक्र

हस्तये सत् ॥ २ ॥

॥ १८ ॥

१८

कनकतया मुक्ता रत्ना ११ क्रान्दाश्च मुक्ता गुस्तु ॥ १० ॥ नवीः प्रवाल तासा जन्तु
 र्जात्रि नावर्तितः स्यात् ॥ ११ ॥ जन्माख्या १ संपादितं प्रत्येकं ता चकाः ॥ बध्मैत्रातिमैत्रास्युः
 तोना नामसद्वक फलाः ॥ १२ ॥ मृत्योस्वरातीतनाम विषयापगुंडसां त्रि जन्म स्वथादघा
 तयेत्परितारका सुलवरां सर्वो विषयान्नः ॥ मृत्युश्चादिमप्यर्थे न श्रुमदेऽथैवां धिर्त
 येशका नादिप्रा न्यत तीयका अथशुभाः सर्वे तृतीयस्मृताः ॥ १३ ॥ वष्टिबुधगतमं मुक्तं
 वरीमुक्तं युगाधे हतं ॥ शराध्वहृच्चैव तोऽर्क १२ शेषेऽवस्थाः क्रियादिभ्यः ॥ १४ ॥ प्रवास
 नाशो मन्त्रां ३ जपस्वहास्याप गतिः ६ क्रीडति ७ सुपूः मुक्ताः ॥ १५ ॥ ज्वराख्य १० कं पास्थिरता १२
 ग्रवस्थामेषा न्ना नामसद्वक फलाः ॥ १५ ॥ १० वृत्ता सीधार्थैर्निशाद्वारुमिः पंखातो ध्र
 युतैर्जलैर्निगदितं स्नानं गृहोत्था वृत्ता ॥ १६ ॥ धेनुः कवचरुणा वधस्वकनकं पोता म्वनं चोदकः
 श्वेतो नौ गसिता महासि त्रज इत्येता न वेदी जराः ॥ १६ ॥ सूर्याय सोम्यां सुदी जतो जन्माग
 सप्ता ७ ३ वृक्षा न विधुराग्नि ३ नाग्नी ॥ १७ ॥ समायमेत्याः त्रि ३ षडा धिष्मासान् ॥ १८ ॥ जंतव्य

विष्णुसहस्रनाम ॥ १० ॥ विष्णुसहस्रनाम ॥ १० ॥ विष्णुसहस्रनाम ॥ १० ॥

जातवर्मनामकम् ॥ १० ॥ कर्मादिसिशोर्विष्वेयं पर्वत्परितो नातीतथोऽशुमेति ॥ एका
 दशोऽष्टादशकोऽपि वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ १२ ॥ अथ प्रसूतीस्नानम् पौष्पध्रुवे
 ण्डुकनवातरपेषु प्रसूतीस्नानम् मिमत्रवीज्यकुजधुसस्तम् ॥ नार्द्रात्रपश्रुतिमवानकामित्रमूल
 त्वादि त्रिसोऽपि वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ १२ ॥ अथ प्रथमादिदन्ता जननफल्गुम् ॥
 मोसे चैत्यप्रथमे भवेत्स दशलोवालो विनश्यत्पुष्पं हन्त्यास्ते कस्तुरी तु जाते भगिनी मात्रे
 जनेष्वपि विदिके ॥ षष्ठ्यदौ लभते हि भोगमतुलनातात्सुखं पुष्टतां लब्ध्वा सौख्यं मये
 जनैः सदसतो चोद्धृत्वापि चादिहा ॥ १३ ॥ अथ दालानिष्क्रमनम् ॥ दालात्रोहऽर्कमात्यं च पशयं
 चेद्युपसृज्यते ॥ तैरुज्यं मयरां कास्यं व्याधिः सौरयं क्रमाच्छिः ॥ १४ ॥ दन्ताऽर्कं १२ भूयः १६ धातुः १८
 दिग्मितवासरे स्याद्विशेषमेदुलबुधुवर्मेः शिशूनाम् ॥ दालाधिसिंहे धनिष्क्रमरां चतुर्थे
 मासे गन्ताते समर्पके १२ मितेति वासते ॥ १५ ॥ अथ जलपूजा ॥ कावीज्यास्तु चैत्राभिमासेन
 पौषे जुलपूजापेत्सूतीकामासपूजौ ॥ वृषे द्वीज्यवागे विनित्तो सिथौ हि श्रुज्यादितीर्धके नैत्रे
 त्रये नैत्रे ॥ १६ ॥ अथ आन्नाशानम् ॥ निक्ताष्टालं १८ नन्दा ॥ १६ ॥ १८ च १ दर्श ३० हविदिवस १३
 एकादशोऽन्निविप्राणां त्रियाणां त्रयोऽन्निमता ॥ त्रयोऽन्निमता ॥ त्रयोऽन्निमता ॥ त्रयोऽन्निमता ॥
 दशो ॥ वैश्यानां षोडशेनाममासां त्रयोऽन्निमता ॥ त्रयोऽन्निमता ॥ त्रयोऽन्निमता ॥ त्रयोऽन्निमता ॥

२०

[illegible]

५१

२२

॥२२॥

॥२२॥

केतिथौ शिर्क ११ १२ दिक् १० दि २ वरः शरपत्रिके नवावुदक ॥ तबुप्रवो नितान्त्यभादित
 शतसमिन्नमे चयेन शततौ शिशोर्लिपिग्रहः शतादिने ॥ २६ ॥ अथ विघात्रमः ॥ अजाउ
 ल्कना ३ अकुते ३० स्वपः ५ शिवमूल्यपू विंकात्रये ३ गुरुहये २ के जीवविहिते लिषट्श
 रपत्रिके शिवा ११ के १२ दि के दि के रीतथो ध्रुवान्त्यमित्रमेघनेः शुभेन धीतिरुतमाति
 कोराके लु गैः शुभाः ॥ ३७ ॥ अथ व्रतबंधः ॥ विप्राणां व्रतबंधनं निजदितं गर्भं ज्ञतेर्वाष्ट ॥ २२ ॥
 मेघर्षे वाप्यथ पञ्चमे नितीत भुजां षष्ठे ६ तथेकादशे ॥ वैश्यानां पुनरष्टमे पञ्चम्युनः स्या
 द्वादशे १२ वत्सने कालेयदि गुरोगते निजदितं गोरांतथाहर्बुवाः ॥ २८ ॥ क्षिप्रध्रुवाहि च
 नमूलमृदुत्रिपर्वा रोदुर्कवि रूशिते दुदिने व्रतं सप्त ॥ दि २ त्रिं ३ गुरुर्देवैव १२ दिक् १० पामि
 तेतिथौ चकलादिमित्रि लवके धपित चापमाले ॥ ३९ ॥ कबीज्यचन्द्रलग्नाया रिपौ ६ म
 लौट व्रतेऽधमा ॥ व्ययेन भार्गवौ तथैतनौ १ मृत्तौ ट सुते ५ खला ॥ ४० ॥ व्रतबंधेष्ट ८ ष

॥२३॥

३३

द्रुतः॥ चन्द्रे स्वत्यवे वदुः स्वयुतः कशादिंति मेधनवान् स्वत्यवे॥ ४६॥ राजसेवी वैश्यच
 तिः शस्त्रार्थं तस्मात्कः॥ प्राशौर्यवान् म्लेक्षसैवी केन्द्रे सूर्यादिस्वे च नैः॥ शुके जी
 वे तथा चन्द्रे सूर्ये भौमार्किशं पुते॥ निर्गुनैः कृन्चेष्टं स्यान्निर्वराः सप्तते पदुः॥ ५१॥ विवे
 शितं शोणितं त्रिकोराजे ॥ ५ गुणे तनौ १ समस्तवेद विद्वत्तयं मं सगेति निर्वराः॥ ५२॥
 शुचिश्च शुक्रोपौषतयसां दिज १ श्व २ सुद्राके १२ संख्यातीति तथयः॥ मृतादित्रितया
 छमी २ संक्रमशां च त्र ते खन ध्यापः॥ ५३॥ अर्के १२ तर्के ६ त्रितीयेषु प्र दोषः स्यात्तदत्रि
 मेः १३। ७। ४। नाच्छादिषामप्रहयेषामप्रधे स्थितैः क्रमात्॥ ५४॥ प्राग्ब्रह्मोदनपाकाव
 द्रुतवन्धान न नोपदिचेत्॥ उन्धातान् ध्यापतो त्यान्नाव पिशातिपूर्वकं सत्स्मात्॥ ५५॥
 वेदक्रमाच्छिशिवाहिकरात्री मूलपूर्वी सुषोमक रमैत्र प्रजादितीये॥ ध्रुवे च त
 चाशिवसुपुष्यकरो तैशकरो मृगां त्यलक्ष्मैत्र धनदितेशत्॥ ५६॥ नोन्वी प्र
 द्योतयं मातु पुष्ये लज्जान्ननेनीह॥ शान्त्या चोत्तमं तपाशः प्रहकार्यो न्यथानिह॥ ५७॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥
 श्रीविष्णवे नमः ॥
 श्रीशिवाय नमः ॥
 श्रीब्रह्मणे नमः ॥
 श्रीमहेश्वराय नमः ॥
 श्रीनारायणाय नमः ॥
 श्रीरामाय नमः ॥
 श्रीकृष्णाय नमः ॥
 श्रीसूर्याय नमः ॥
 श्रीचंद्राय नमः ॥
 श्रीशुक्राय नमः ॥
 श्रीमार्तण्डाय नमः ॥
 श्रीगोमते नमः ॥
 श्रीगौरीय नमः ॥
 श्रीगङ्गाय नमः ॥
 श्रीसिन्धुय नमः ॥
 श्रीयमुन्याय नमः ॥
 श्रीगोमत्याय नमः ॥
 श्रीतप्तीय नमः ॥
 श्रीवर्धन्याय नमः ॥
 श्रीशालग्रामाय नमः ॥
 श्रीमहादेवाय नमः ॥
 श्रीशंकराय नमः ॥
 श्रीनमो भगवते वासुदेवाय ॥

धर्मान्तरं बर्जिता शोभनाः शुभाः ॥ त्रिउषः जात्यं ॥ खलः पूर्णो गोचरैस्सो
 विधुस्तनो ॥ ४१ ॥ विप्राधीसो भार्गवज्यो कुजाकौ राजा न्यानामोषधीशो विशाच ॥
 शङ्कराणां ज्ञानं तज्ज्ञानां शक्तिस्या च्छास्वशास्य जीवशुक्राजसोम्या ॥ ४२ ॥ शार्वेश बभूव
 वीर्यमतीव शस्तं शार्वेश सूर्यशशि जीवले व्रतं सत् ॥ जीवेत् जौत्रिपुण्ड्रहे विजिते
 नीचेर्याद्विदशास्त्रविधितारहितो व्रतेन ॥ ४३ ॥ जन्मर्क्षमासलग्नादौ व्रतविधाधि
 को व्रतौ ॥ आद्यजर्मेपी विप्रानां ह्यत्रादीनामनादिमे ॥ ४४ ॥ बहुकल्पा जन्मराशेऽस्त्रिको
 राणां पद्मिपूजाः ॥ १५ ॥ ११ ॥ २ ॥ ७ ॥ श्रेष्ठो गुणः प्रखरः आद्ये १ ॥ १६ ॥ ३ ॥ १ ॥ पूज्यात्यन्तनिन्दिताः ॥
 स्वैस्वमेस्वमेनेवास्वमेवर्जो तमे गुणः ॥ निष्करा १२ ॥ ८ ॥ तूर्य्य ४ ॥ गोपीद्योती चारिस्थः
 शुभोपपन्नः ॥ ४५ ॥ कल्लेपदोद्येन ध्यायेत् शनौ निश्चयवान्तके ॥ कं ध्यायेत् शनौ ॥ तो ३
 व्रतबंधो गलग्रहे ॥ ४६ ॥ क्रूरो जडो भवेत्पापी प्रदुःखकर्मकृद्बुधः ॥ यत्तार्थं भाकृतपा
 मूर्खो न व्याधं शीतलो क्रमः ॥ ४७ ॥ विघातिनः सुभराशिलवेपापाशगतो ह्यरि

हर्तुर्वि
तोगरि

२४ सु

२५

आद्यस्थः प्राच्यप्रचलनाद्यदिन्दुर्जमे चूनः संप्रमेवाकुंजः स्यात्ताम्रतैवेन्द्रस
प्रमेतस्य जौमे ॥ अंतासास्याद ईदं न्यत्सवेसा ॥ ४ ॥ प्रसूतनौ योदि पापन भोगः पं
चमगो निपुष्ट शरीरः ॥ नीचगतश्चतदाखलु केन्यासाकलया त्वथ चाम्रतवत्सा ॥ ५ ॥
यदि भवति सीतांति मत्तपन्नेतनुग्रह तस्मिन्नाशिजः शशांकः ॥ ६ ॥ प्रशुभ्रवैवि
जितोऽमिन्ध्रे भवति विवाहविनाशकाय कोयम ॥ ७ ॥ जन्तोऽथ च विमोक्षवाचविधि
वायोगं विचाप्य व्रतं सावित्र्य इतपैष्यन्तं हि सुतयादधादि सांवातहः ॥ सत्तज्जतेऽव्युत्तम
र्तिपिष्यलवटैः सत्वा विवाहस्फुटं दद्यात्तां चिन जीविते न न भवेद्योषः पुनर्भू भवः ॥ ८ ॥ पुष्प
लज्जे दोषोपादशापत्यपुष्प क्वेच पाकामिनी तत्र चेदाव्रजेत् ॥ कन्यकां सुतोवातदा
परिहृतैस्तादशापत्यमस्या विनिर्दिश्यते ॥ ९ ॥ संस्वमेवो विपञ्ची न वेमं गले जायते वैषमि
मंतदाय समेत वापसो वासनः श्यामगालोऽपि वापस लज्जे सतो मोतिना दया ॥ १० ॥
श्वर्याती वैश्नवपूर्वो न पने नैव न ज्ञेयै की कन कीडोदित निहैः कस्त्रालंका
विसमेतैः फल उषे सतो व्यादो स्यादनु कन्या वनरां ॥ ११ ॥ वनरा देवोऽथ वा कन्यः फ

च ४

चि २४

तिच ३

धा-

निच

इति व्रतवन्धं॥ अथ कुर्यात्तु व्रतसमावर्तनकेशान्ता॥ विचैत्रव्रतमासादौ वि
 भौमास्तौ विभूमिजे॥ कुर्यात्तु व्रतसमावर्तनकेशान्ता॥ विचैत्रव्रतमासादौ वि
 शेषार्धे बौलोक्तदिवाशुभे॥ व्रतोक्तदिवासादौ हि समावर्तनमीष्यते॥ ५॥
 ६॥ इति श्रीदेवजननसुदैवनामविश्विते सुहृते चिन्तामणे संस्कृतप्रक
 रणम्॥ पञ्चमः॥ ५॥ अथ विवाहपुकरांशः॥ भार्यात्रिवर्गिकनराशुभश
 व्युक्ताशीलं शुभं भवति लग्नवशेन तस्याः॥ तस्माद्विवाहसमये परिचित्यते हि
 तं निष्ठातामुपगतास्युलशीलधर्माः॥ १॥ आदौ संपूज्य नत्नादिप्रत्यगाराकं वे
 दप्रेतवस्थचित्तंकन्यावाहं दिगीशानलहयविशिषे प्रह्लादगनाद्यदीन्दु॥ ६॥
 जीवेन सद्यः परिणयनकनो गोरतुल्यैर्कैर्वासात्प्रह्लादस्य लग्नं शुभं सच
 नयुतालोकितं तद्विदध्यात्॥ २॥ विधमभासगतौ शशिभागवितनुरगहं वलिनौ
 यदि पश्यतः॥ न च यतो वानला मीमोषदापुगलभासगतौ युवती प्रदौ॥ ३॥

मित्यनिपा ११ वधावनस्यापि कुले त्रिजुषे नो भां व्रजे त्वश्वतानि श्वपोत्तनं
 मासो ननं तत्र विहृद्व्यते श्रांत्वा यवास्तननिर्जमेधनेः १० चक्रवर्तं
 चापि विवाह तोषता चूडा चनेष्टा पुत्रपन्नाने वधूपवेशा च सुता
 विनिर्जमः परमासतो चाब्धिविभेदतः शुभः १० श्वश्रुविनाशमहि
 जोस्तुतरं विधत्ते कन्यासुतो निःश्रीतजो श्वश्रुनं हतश्च ज्येष्ठाभजा २५
 ततनयास्वभावाज्जं चैव शक्रादिना जातवति देवनता शक्रं श्री १५
 द्विषाद्यपादत्रयजा कन्या देवनसौरव्यदा मूलान्यपादतर्प्या घ
 पादजोते तयोर्धुमे २० वरोगिवश्यस्तथा तारापोनिश्चग्रहमेत्रकं

सोदनः शुभदिने जीतवाद्यादिभिः संयुतः ॥ वनवर्तवस्त्रजग्योपवीतादिना पुन
 युतैर्बलिपूर्वात्रयेनाचरेत् ॥ ११ ॥ गुनुशुद्धिवसेन कन्यकां समवयस्यया
 वकोपमिच्छात् ॥ नविशुद्धिं वशाच्च भोजनाराणामुभयोश्च न विशुद्धितो विवा
 हः ॥ १२ ॥ मिथुनकुंभमृगशिरसा जेजे मिथुनगोपिनौ त्रितवे श्वचेः ॥ अलिप्त
 गाजगले कनवीः सां भवति कार्तिपौष मधुखपि ॥ १३ ॥ आघातस्मृतकन्य
 र्दपोर्जन्ममासभातिथौ कनग्रहः ॥ नोचितो धर्मसंबुद्धेः प्रशश्यते वेदी तीर्थजनु
 यो शुभप्रदः ॥ १४ ॥ द्वेष्टद्वंद्वं मध्यमं संप्रदिष्टं त्रिज्येष्टं च नैव पुतंकदापि
 केचित्सप्तैर्वन्ति गंधोद्यचाहुतैर्बान्योन्यं ज्येष्ठयोः स्याद्विवाहः ॥ १५ ॥ सुत
 यन्निष्कृष्टात्परां सान्तः सुता कनवीः इनेन च निजकुले तद्वदामलुनादपि न
 श्यते न च सहजपोर्दपोर्जीवोः सहोदरकन्यकेन सह जसुतो दाहोऽदाहेन

शसिजः १३ कार्कशो वेतिरोसोम्य स्वास्यसमाविधोर्बुधनबीमित्रैरौ चास्यादिवत् शेषा
 १३ स्वास्यसमाः १३ ज्ञानमुह्ये चत्वे ज्यसूयाबुधः शत्रुश्चक्रशतीसतो वशशभत्सुनोसिता
 नैस्त्वो २१ मित्रेचास्पत्रिपुः शशीगुनुशाने रमाजाः समाजीम्यनेमित्रारण्यके कुजेद्वो
 बुधमितौशत्रुसमः सूर्यजः मित्रे सौम्यशनीकवेः शशिववीशत्रुक जेज्योसमो मित्रे
 शुक्रबुधौशने रावशाश्री ७भाजादिवोत्येसमः २८ अथप्रायोः नोतयामनगराः
 क्रमं नोमवाहिवस्विन्दमन्त्रवपुरातनत्नलनाधा ॥ पूर्वतित्रात्रयविधातपमेश
 भानिमेत्रादितोन्दुहविपोसमन्त्रवुनि २९ निजानिजगरामध्ये प्रीतिरत्युत्तमास्या २६
 दमप्रमन्त्रजयोसामध्वमासंप्रदिष्टा ज्यसुनमन्त्रजयोश्चेन्मत्पुत्रेवः प्रदिष्टादन्त्र
 विबुधयोस्याध्वमेकनतीत्र ३० अथप्राशि कटं ॥ मत्पुः षड्भाष्टके ज्योपत्यहा
 निर्नवात्मकेदिनिर्वतत्वं चोत्रत्यत्र सोम्यकत ३१ पोत्तेद्वे भकटकेपनिराणस्त्वे
 काधिपत्येश भोथोराशीश्चदपिजादितोनाप्रज्जश्रीदि अन्येर्लींशपयोः वलि
 त्वसरिवलेनाडी विशुद्धे तथातानप्युद्विचनपि वसतोभावोनिनुक्तोबुधैः ३२ मैत्र्या

गरामैचं प्रकृष्टवनाडी चे ते गुराधिकार २१ दिजाभर्षालिकर्कटास्ततो नृपाविशो
 ॥ विजाः ॥ वरस्पधरौ नैऋतिकावधुर्नक्षत्रस्यते बुधैश्च हिताम्भजेद् नर
 नाशिवश्यास्तर्वेतथेषां जलजास्तु भक्ष्याः सर्वे पिसिहस्यव सेवितालि ज्ञेयं नृपानां
 व्यवहारतोऽन्यत् २३ कन्य दौघ्रमयावत्कमं वनभादापि गरायेन वभिषेकाः ३
 ॥ ५ ॥ अद्रिः भग्नसत्सुतः ॥ अश्विन्यम्बुपमो ह निजदितस्त्वात्यर्कयोः कात्तनस्सिंहो व
 श्वजपाभ्यसमादितो याम्यातमो कुंजनः मेघो देवपुत्रो हिता नृलक्ष्यो करीण
 नुनो वानरः स्याद्दृष्ट्वा भिजितोस्तथैव नकुलोश्चन्द्राजो मोनाहः २४ मेघमित्र
 भयोऽंकुजः उदितो मूलद्रपोऽश्वा तथा मज्जीरो दिति सार्धयोऽपि मन्त्रो यो न्यातथे
 दौदुनः व्याघ्रो दीश भचित्रयोऽपि च गौराय मन्त्राः बुधो यो योनिः पादमयोऽपि स्युः
 महावैरविवाहः सत्तमः २५ अथ मित्तमशनुमिः ॥ त्राणि पुमरोः ॥ कुजे ज्य

३१

३२

श्रीः

समरा
शु ५
दृ ७
दृ ८
श ५
अ ५
प ५
म ५
श ५
दृ ८
श ५
श ५

विषयमै

१८५१३५०११

म २

विशिष्टाः समराशिनो चे त्रिंशंशको विधेयतमस्यादेवकाराकाः प्रथमपंचनवाधिपाना
उत् अथ द्वादशांशवर्जं माह स्याद्वादशांश इह नाशितस्वर्गे ह हा यथ धु ३ नवैवांसक
सूर्यभागाः त्रिंशंशकश्चषीडमेकथितास्तुवर्जः सौम्यः शुभं भवति चाशुभेव पापे ४१
अथ जंडांतः ज्येष्ठापौष्णप्रसार्यभातवटिपुंजमंचमूलाश्विनीपित्रोदोवटिकादयं निजदितं
तद्भस्वर्गं जंडांतकम् कर्कात्यं जंडांत ११ भातलोद्वटिकासिहोर्षमेधादिजाया ११ पूरां
लोद्वटिकात्मकैश्च शुभं दं पा ११ १५ नंदातिथे ११ ११ ११ आदिज ४२ अथ कर्तरी लग्नात्मा
धावज्वलं व्यपार्थस्यौपदातदाकर्तरीनामसाज्ञेयामत्यु दानिद्रशाकदा ४३ अथ
युतिः वंदेसुप्यादिसंपुत्ते दा निद्रमवरांशुभं सौख्यं सापत्यवेनाप्यपायदपुते मतिं
जन्मलग्नमयोर्भत्युनाशौनेछः कवग्रहः स्काधिपत्ये वाशीशमैत्रेवानैवदोषकत ४५ मा
नोर्जैर्कर्कालिं मग १० सिर्पोहूं मंलग्नपदानाच्छमगेहदोषकत अन्योन्यामित्रत्ववसे
नसावधूभवेत्सुतापुर्गहसौख्यभागिनी ४६ मतिभवनं शोषादिचविलग्नैतदाधि
पतिनी न शुभकनः स्यात् अन्यभवनं वा भवति तदंशः तदधिपतिवाकलुः कनः स्यात् ४७
द्वादशांशवर्जनकस्वामी लग्नस्थः वाद्वादशांशलग्नैतदान शुभः ॥ अथ भवनकस्वामी लग्न

स्यः वाद्वादशांशलग्नैतदान शुभः ॥ अथ भवनकस्वामी लग्न

षोडश
धनीश

शशिस्वामिनोऽंशनाथद्वन्द्वस्यापि स्यादुराणां न दोषः विटानित्वनाशयेत्सम्यक्
स्वेष्टप्रोतिश्वापि दुष्टमकुर ३३ अथ नाडो ज्येष्ठायां नाम्नो बभूवुषा पुण्ड्रं दाम्भ्रं चैक
नाप्योपुष्येन्दुत्वाद्युमित्रांतकबभूवुषा जलमपो निर्वृत्ते च मध्यां वाग्निव्याल वि
श्वोपुण्ड्रं मथोपौष्मभंचाप्रास्यादस्य त्योरेकना प्राप्तिरायनमसन्मध्यना प्राप्ति
मत्पुः ३४ विषमात्कन्यकाशः स्रष्टवष्टीकनसत्समात्स्रष्टं शुभं जेपं विपरीतं नशोभ
नं ३५ अथ वज्रकूटः अकचटतपः पृथग्वज्राः ४ विजेशमाजानसित्प्राज्ञा सपरिवम
गावीनां निजपंचमवो निरौमष्टे ३६ राशेवैचैत्तम अद्वयं स्यान्नजत्रैक्य राशिपुण्ड्रं तथैव
नाडीदौ नो गरातां च दोषो न जत्रैक्यपादभेदशुभं स्यात् ३७ शब्दाधमरापुवती नजनादिभ
चैत्पूर्वहिंष्ट त्वर्धनभर्त्तुपुनादिसभ्दात् शेषाचिनाशधननाशनभर्त्तुनाशगनामादिसौ
व्यहोददं क्रमशः पादं ३८ स्वामी कुंजशुकसौम्यशशिसंघं चंद्रमाकविभौमजीवशोनिमौनयो
शुक्रहाराशिपुण्ड्रं गावेंदुमतोनवांशविधिनुच्यते बुधे ३९ समग्रहमध्येशशिशिविहोना
विषमभमध्योत्रविशिशिनोः सा शुक्रजो जीवशतिभूततयस्य वाराशे लाघवच
स्य तोलै २ मिह

तिथिभाजताः धिजिस्पात् ४५४ वेधो नोन्यमसोवि नैचिभिजिते जास्यातु यथा नै
 योर्विश्वेन्द्रो हानमि त्रयोर्ग्रह क्तो हसो तया भाद्रपदः स्वातो वापुशयो र्भेवो न्विजाति
 मादित्योस्तथोत्फातयोः स्वेष्टतत्र गते तु योष चक्रसाधो बोत्रितीपवयोः ५५ शक्रे ज्येश
 तभानिले ज ह्यशिवो मेर्ये मा र्जेव सुदीशे वेश्वशुभां शुभे हय प्रजे साध्यानुनाचे
 मिथः हस्तोषानीममे विजात विधिभे म्पुलादिति त्वाष्ट्र भाजं द्वीयाम्य प्रवेकशा
 उहर्षिभेवैकु कुमिद्रैषिके ५६ मज्जानी कू रविज्जानी कू नमुत्तप्रादिकानि नमुत्तया
 चंद्रेण मुत्तगानी शुभहानि प्रबज्जते ५७ अथ यत्ता रा राहु पूर्योन्दु शीत श्वपदये
 मंसं प्रगो जाति २२ शवैषा मितां हि संताप्यंते कै शनीज्य भौ मासूष्या १२ षट् तका ६
 मज्जि ३ मितं पुयस्तात् ५८ हर्मरा वै धृति साध्य व्यतिपात गं इश लयो जा तां अंते
 पन्न न्न त्रं तत्पाते न निपाति तं स्यात् ५९ अथ क्रांति साम्य पंचैस्व ज्यो १ जो म
 जो नौ त्रिं कुं भौ क न्या मी नौ कै कार्त्ति चर्पि युग्मे तत्रा त्यान्यं चंद्र भा न्वो निरुत्त

२८

२८
ययोमि
थः ६

अथ पा
२८

३३०

२८

२९

जन्मैः धैर्यमस्युः तिथोदितौ पाप्रमुरवाश्च दग्धाः ६४ अथवा मित्रं लग्नाच्च
 न्द्रोत्तमदलमवतनं खेदेन स्यादिह पत्रिराघनम् किं वावासां शुभमितलवगेपापमित्रं
 स्यादशुभं कनमिदम् ६५ वीश्वः एकां गोलोपग्नहपातलतापामित्रकल्लेयुदपासदो
 षाः नश्पातिचंद्रार्कचलोपपन्ने लग्नेयथाकीभ्युदये तु दोषाः ६६ उपमर्जे कुतुर्वाह
 केभ्युक्तानि गवंगेषु च पातितं भंशो ग्राह्यशालेषु च जीतं भंश्यजे द्विद्विजलसर्वदेशे ६७
 अथ दशपौगः शशाकसूर्येर्नपुते भशे घेखभृपुंगो गौदशपुद्रातिथ्याः नागिन्येवोके तु मित्ता
 नरेवाश्च भवंति चैते दशपौगसंज्ञा ६८ वाताभ्याग्निमहीपचौरमंत्राणुके वज्रवादाश्चानिर्पो
 गां केदलिते समे भनपुतैर्धौजे तु सैर्वाहिते भंदास्त्रा दथसंमितास्तु मनुमित्रेषा क्रमा
 त्संलिखेद्देवोऽस्मिन् नीचचंद्रयोर्नशुभदः स्यादेकत्रेनास्थयोः ६९ लग्नेनायं पातति
 प्योर्कलभ्याः शेषेनागौ

यद्विर्तके नु संख्ये योगो वनिना ज्यौ ज्यौ च मत्पुर्वी राश्चापे दानिराग

सद्यं छन्दिक १०१३

[The manuscript page contains musical notation on staves at the top and handwritten text in Devanagari script below it.]

त्येप्रमिदः ६० नसं गुरां शिवां गां धां नसं क्रांतिपातां शकमिति नयतया केपदापंचशे
षाः गुगनलत्प चौरामत्युसं जश्च वारो नवह तशरशे
विशेषके केशसत्यः ७१ गत्रौ चौरुजौ दिवान्नपतिर्वन्ति सदा संध्यपोरत्युस्वाथ
शतौ न्यपो विदिमते भोमो गितचौ पौनवौ नोर्जो थन्न जह गोपैत्तपशे वाया तपाणा
ग्रहेषु र्वा स्वक्रमशो बुधैः ३ गतल रमापालचौ नो मतिः ७२ र्वा शंत्रिकौ रौ
चतुर्न सैमसं पशपेति रवेदाश्च रणाभिच्छामन्दो गुनुर्भूमिस्तुतपत्रे चक्रमेरा शम्परीद
शोत्रवेघाः ७३ कदा लग्नां शेषो लवमथतुं पश्यति पुंता भवेद्वापे बोदुःशप्रफलमुनत्यं न चप
ति लवघूनस्वामी लवप्रदन् भलग्नप्रदन् प्रपश्येद्वा वध्याः ७४ भोमि तनया ज्ञेमि शभम ७५
लवेशो लवका नपो लज्जो हंप्रपश्येति मथो वाशुभं स्येद्वयस्य लवघूनपो संघुनघूनपो
स्तामिथो वेशते स्याच्छुभं कल्पकोपाः ७५ लवपीतशममि त्रवी श्यते सतल नापमिरापन
कनस्याच्छुभं शशुद्ध मप्रदन् लवयामि त्रस्तोप्यमं शयूतं वातनुमदन् गृहं चेद्दीप्यते श
मवध्याः ७६ विदुर्वापनि युपय पूर्वमध्यमादिवर्या नत्यजेदितनसंक्रमेषु च धरिकास्तुषो

रवौ सार्धं च यजुः प्रोक्ताः मंदाग्रे के त्वात्रे शौद्धे कै कं विंशोपकाः ६० श्वश्रूः सितो कै श्वसु
 रंत नृतंतं यामित्रपती स्यादपितो मतश्शशी ॥ स्तनवत्वं संप्रीतमाच्यतां त्रिकाः तेषां शु
 षं संप्रवदो विवाहः ॥ ६१ ॥ कक्षे पक्षे शो नि कुलार्के पितृवर्जं नृजने यदि वा स्यात्कन्यापि
 संकीर्णां शांतां हि सुत्वा युर्वनं लाभप्रीति प्राप्ते सा भवति स्थिरनेषा ॥ ६२ ॥ जं धर्वादि विवा
 हेऽर्कं धर्वादेते त्रैगुणो न्यवः कुं पुं जां गी न भू नामै त्रिपधाम शुभाशुभाः ॥ ६३ ॥ विधोः च ल
 मनी नृपवा दवन कं न चानकं गच्छं गरा विभू रान्यथ च वेदिका नं डपात ॥ विवाह
 विहृतोऽभि विन च येत थो द्वा हृतो नृपूर्वा मिदमा चने त्रिं रा विष र्मिते वासने ॥ ६४ ॥
 मेधादि यति श जव च वय पो विटो श्व तै लादित्ये पत विधो कौ श्वता हि संख्या शे लादि
 शांशत्रदि जं नृनागादि वारा वा न वारा गिरयो मुनि निश्च वै चित ६५ हस्तो
 ज्ञा प्रावेद हस्तै सं मं तातु त्या वेदी सप्त नो वास भागे पुग्मे व स्रे घ छ ही ने च
 पंच सप्ता हे स्या न्मं डपो धा स नृं सत् ६६ सूर्ये गरां सि हं धर्वा से वस्तं प्रो
 लि को दि रा ष म् गे ष वापु मी नो जं भौ नि त्रतो विवा हे स्या प्यो गिन को

39

39

रा

31

प५

नितीतसुतोदिगुराण्यजोजाः षष्ठ्यपाद्युनीह तौ जगह सितोय चिधून बध्वः
 पण्डितान्प्रतिहृत्यशस्ताः ८५ पापौकर्तृनिका नकोनिपुण्यहेनी चाल्लोकाकर्त
 रीशेषानैवसितेनिनी चण्डहजेतत्यक्क दोषोपिन ॥ मोमे त्तेरियुनी चमेताहिम
 वेन्दोमोयजोदोषकृत् नीचेनीवनवांशके शशिनिनिषकराष्टनिदोषोपिन ८६
 अद्वान्तुतीथिमासभप अद्वधातिथ्यां धकाराबधिनोगमुरवाश्चदोषाः नश्यति
 विदुर्गतेष्वरुकेन्द्रेकोरोः तद्वच्चपापविधुपुक्ततनांशदोषः ८७ केन्द्रेकोरो
 जीवत्यायेनवोवा लज्जेचन्द्रेवापिर्गोतमेवा सर्वदोषानाशमाप्नोति चन्द्रे
 लाभे तद्वदुर्मुहूर्तशदोषाः ८८ त्रिकोरोकेन्द्रे वामदन्तरीहतेदोषशतके १००
 हरेत्सौम्यः शक्रोदिगुराण्यपि लक्ष सुजगन् भवेदायेकेन्द्रे गपउतलवनेशो
 पादितदासमूहदोषासां दह नइवतुलंश मयति ८९ बह्वन्तु जवोपचेन्द्रे

भोजे निवात्सोदपात्स्वाग्निभक्त्या त्रैलोक्यं भुक्ते चोत्तरालोदपात्स्वाग्निभक्त्या भुक्ते स्वेष्ट
 नाद्रो भवेयुः १०४ चैव्यगताकोसापनावेकत्रासोतीदस्तिषड्वादपः स्वाग्निभ
 क्तात् ॥ खेष्टः कालो जगन्मूलं पदाकीद्रात्रेश्वोकीत्सपञ्जानीसायां १०५ उत्प
 न्नसहपातदग्धतिथिभिर्दृष्ट्यश्वयोगस्तथा चंद्रो ज्योशतसामथास्तमपनंति
 थ्येद्वयार्धेस्तथा गडोतंचसर्विष्टसंक्रमादिनतन्वंशपापस्तथा ॥ तन्वोशेशर्वि १०६
 ३२ सेन्दुक्रूरखगादप्येसमुदपास्तशुद्धिचंडायुधं स्वार्थयंदशयोगयोगसहितं यो ३२
 मित्रत्वलाव्यधं वारोपग्रहपापकर्तारितथातिथ्यर्वात्रोत्थितंदुष्टं योगस
 थार्धज्ञामकुलिकाघाज्वायदोघानपि १०७ क्रमांक्रांतविमुक्तमंग्रहनभयत्क
 रगतव्यभं त्रैलोक्यात्तहतवकेतुहृतसंध्यादितेभंतथा तद्वचग्रहभिन्नयु
 ३२ कगतभंसर्वाभिमासत्पजे दुर्द्वलिशमकर्मसुग्रहकृतातलग्नस्यदोघान
 पि १०८ इति श्रीदेवज्ञानंतसुतदेवज्ञानाभिवाचितेमहर्षीचिंतामणौ विवह
 प्रकरां ६ अथवधूप्रवेशः समादिपंचांगदिने विवाहाधूप्रवेशोष्टिदिनां
 भं ४ चमथाष्ट निपुण नपापस्पवगीस्तथा ८

गोवर्धपुष्पं कर्कशं न स्यात् न तत्तिथि कत्रा नैव त्वत्तस्य चिन्ता नो वा वा
 मोन च त्वव विचिन्ते मूहं तस्य च धूर्तौ वा यो गो न मति मवतं ता पि पातित्र
 दोषो गो धूलिः सामुनि मिनुदिता शर्वकार्येषु शस्ता ६८ पिंजी भूतेदि न क
 ति हे मंत तौ स्याद धांस्ते तप स मये गो धूलिः संपूरास्ते तल ध्वर माला काले
 त्रे धा यो स्या स कल शुभे कार्यो दो ६९ अस्ते जाते गुनुदि वसे सोवे सार्के लज्जा
 न्युत्यो रिपु भे लज्जे चेदो क त्या ता संतनु मय त मं स्थिते प्रो मे बोद्धुः प्रो मे धने
 सहे जे चंद्रे सौर्ये १०० मया दिगे कं छ स रा प द न ग ना स प्रै ध वः स पुं स रा ग जा
 नो गो भावते की क व सा कु त की कं ग नि यै छी नै व पंच भुक्तिः १०१ स
 कांतिया त ध्व सा प जीति नि ध्वा खर्षं हृ ता ल ध्वे नां शादि ता यो ज्यं पा
 त न्नं स्य छ मास्क १०२ त लो नि छ श का त्यूर्व रा वो शा द श सु गु रा रा मा
 धै र्व ध्व मं शा धं त नो र्वा र्ग दि सा धने १०३ अ की ह्ये ना सा य ना भ्या य भुक्ते

जीवत्सवर्गः तस्य पात्रीणां भवद्वा जमुनेकुले तथा ४ इति हि रागमतं यथा
 जन्मा भूतं स्यादग्निहोत्रविधि रत्तरगेदि तेशामिमां ध्रुवां त्यशशिशक्रसुने ज्य
 धिले पित्तसुतो वु जशशी ज्य भ गौ न नी चे नास्तं गतौ विजते न च शत्रु गे हे
 मा कर्क न क्र भू ष कुं मन वां श ल ग्ने नो नो त नो नी व श शी ज्य कु जे त्रि को रो
 ने द्र अ ष ट त्रि भ व गे च प त्रै त्रि भू ष ट र्थ स्थिते नि धि न शु धि यु ते च ल ग्ने न
 चा पे जी वे त नु स्मे वा मे षे भौ मे व ने पुं ले ष ट चा पे शे न वा स्या ज्ञा ता ग्नि
 प म्प ति ध्रु वं रा ज्ञा भि षे कः श भ उ त रा प रो गु विं दु श क्रै रु दि तैः व त्ना त्वि
 तैः भौ मा र्के त्वा ग्ने श द शे श ज न्म पे नो वै त्रि पित्ता न नि शा म लि मु चे १ शा क्र म्
 व पि प्र म दु ध्रु वो गु भैः शी र्षो द पे चो प च पे श मे न नो पा पे त्रि ष ष्ठा प ग तैः श
 भ ग्ग हैः के न्दु त्रि को शा य ध न त्रि सं स्थितैः ५ पा पे त नो भू क् नि ध ने म ति

न 3

३

हप्रभासे४

अभिमासे३

प्रथमयात्रासुमेध

जन्मिनीनवेठा७

तयाले शुभः परमादिषमावमासेदिनेनैवधीत्यत्रलोपथे१ ध्रुवजिप्रम
दुष्टोत्रवसुमूलमन्त्रानिले वधूप्रवेशसन्नेष्टो नितामर्किवुधेपत्रेः २ ज्येष्ठ
पतिं ज्येष्ठ मथाधिकपतिहं त्यादिमेभ्रर्त्तगृहे वधूसंघौ स्वश्रंसहस्येश्वसु
नंरूपैतनुं तातंमधोलातउष्टे विवाहः ३ अर्थाद्विगमनं चयेदथाजहायनेव
यालिनेषगेत्रवोयवी ज्यश्रुधियोगतः शुभग्रहस्यवासनेनपुजनमीनकं न्यका
तुलावधोविलग्नोदिनागमंलबुधुवेचयेस्त्रयेमृदूनि १ देत्याज्याह्यभिनु
षदजिरोपदि स्यादुक्तेयुः नाहशिशुगर्भिणीन"बालश्चेद्भूजातिविपपते
नवोठाचेदध्याभवतिगर्भिनीत्वर्भा २ नगनप्रवेशविषयापुपदवेकवपी
उने विबुधतीर्थप्रात्रयोः नपपीउनेनववधूप्रवेशनेपुतिभार्गवोदोषक
तजलीउपिजेगृहेवेकुवपुष्पसंभवः तदातदोषः प्रतिशुक्रसेभवः भृजंगि

वोवे

मल

वोवे४

१ नगोभास्कनेपि शिबुं कनिर्वनरोराघू नगेवापि येषै सपौ दिभवति भंगं प्रश्न कर्तुं त
 दानिः ५ त्रिकोरोकु जा तसो निशक रजनी वाघदैको पिवा तो गमेकी कशीवा वालीयां
 सुमध्ये तयोर्पि जहस्या त्वकी पांदिशां प्रत्युता सो नयेच ६ प्रश्ने जग्यदिगिमा त्वेवः पंच
 प्रजायः वो भूपाद्वलपुक्तः स्वमाशां न तिसो ७ वतु प्रेषसिंहेषु यात्रा प्रशस्ता शनि
 शोशानो राशिगे चैव मध्या नवो कर्क मीना लि संस्थे लि दीर्घा जनुः पंच सप्त त्रिता न
 चनेछा ८ नवमि नच द्वादशी ताठ मी तो सिता घा तिभिः पूर्णा प्रा मान
 मिता ह्यादित्य मे त्र्येदु जी वा त्यहस्त श्रवो वा सवै रेव यात्रा प्रशस्ता ९ न पूर्वो दिग्दिशा
 क्रमे न विधुसो निवारेतथा न चाजपाद मे गु रोप मो दसां तु सु कार्कयोः न पाशी दिग्दि
 धात् मे कु जवु धे र्यम जेतथा न सो म्य ककु मं बु जे स्व जय जी वि हि ता र्थि बुधः १० पूर्वो दि
 धुवमि श्र भै न पते पीचा मध्या न्नके ति श्राख्ये नय ना रू के न लव भु भै नो पूर्व नात्र तथा
 भै श्राख्ये न च मध्या नि स मये चो जे सथा लो चनेः न यंतं रु भू तपु छशदिभिः स्या

सुते पुत्रार्थि यथार्थं मे दत्ति दत्ता ह्याह्ये लक्ष्मि च पदो धुं नो भुजैः सर्वेशु
 प्रेकेंद्रुजैः शुभग्रहेः ६ गुरु र्जुन कोशक जायो सितः स्वसराजा सदा माद
 ते नाजल ७ भ्या तृतीया प्रजो सोमि सूर्यो ध्वं धौ गुरु र्जुन श्रीस्थिना स्यान्टप
 स्य ७ इति राजाभिषेक प्रकरणं अथ पात्रा प्रकरणं पात्रा पां प्रविदित तत्त
 नं तपा नादात व्येदि वसम बुद्धा जन्म न च प्रज्ञा धेः नुद पानित मूल भूतैः विज्ञा
 तैः शशभा शूभेः बुधः प्रदद्यात् १ जनेन रासित नू पदिलग्न गेत दधि पौषादि
 वाते तस्य ववात्रि विंश्यां पौषादि चोद पे विजय य व भवेद शुधापतेः २ मिश्र
 जन्म लज्ज भ मथाधिपौ तपोस्ततस्य क चोप च प्रसन्न चेद्भवेत् हिवुके पुने ३
 यशु भव ग्जिकस्तनौ पाद मस्तकोद पंगु हं तदा जपः ३ यदि प्रहस्तनौ वसुधा
 उचिना शुभ वस्तु मादि भुति दर्शन भम पादि प्रकृति चाट रतश्च शुभ ग्रह दृष्ट पुतं
 वरलग्न म ४ विधु पुत्र पुत लग्नै सो निदृष्टे य च द्रुम ति भ म द न संस्थे त

मि ५

धर्मिणेभास्व रोवितमो न्देशशीवित्तजे धर्ममोक्षस्थितः सस्यतो कामजे धर्ममो न्नाथीगः
 शोभनो मोक्षो वचनं धर्मजः प्रोच्यते १८॥ अथ लिपि चक्रं ॥ पौषे पद्धत्यादिका द्वादशी
 श्रुतिष्यो मावा दौहितीयादिकास्ताः ॥ कामातिस्त्रः स्युः तृतीयादिव च घाने प्राच्यादौ फलंत
 तत्रैव २०॥ सौख्यं क्लेशो भित्तिरर्थगमश्च शून्ये नैश्वनिश्चलानि श्रुता च ॥ द्रव्यैः सौख्यं
 मिथ्या प्रितर्थात् लाभः सौख्यं मंगलं वित्तलाभः २१॥ लाभो द्विर्व्यपि धनं सौख्यं पुनर्भित्ति
 लीभो मत्पुनर्थागमश्च ॥ लाभः काष्ठं द्रव्यलाभो सुखं च कंठं सौख्यं क्लेशलाभं सुखं च
 सौख्यं लाभः कार्यासिद्धिश्च कंठं क्लेशः कल्याणसिद्धिरर्थो धनं च ॥ मत्पुनर्लाभो द्रव्यला
 भश्च शून्यं शून्यं सौख्यं मत्पुनर्त्यंत कंठं ॥ २३॥ तिथ्यन्ते वात्रयुतिरदि १ गता रिनतम्या
 स्थानत्रये च विपत्तिः प्रथमेति दुस्ति ॥ मध्ये धनघातिरथोचनमे प्रतीत्या स्थानत्रये
 कपुत्ति सौख्यजपो निनुत्तौ ॥ २४॥ न चैर्भलो न भो निमतान गवशेषित विष्ठा ॥ महा
 उलो न सस्यते त्रिघनिमला भ्रमो भवेत् ॥ २५॥ सशोकं प्रसूर्य भ्रमो पुगाराय पद्धादिति

३५

३५

पूर्वार्धमिति ज्ञात्वा तन्मन्त्रं चिन्तयित्वा तन्मन्त्रं नृपस्य मन्त्रं गमयति तन्मन्त्रं चिन्तयित्वा तन्मन्त्रं नृपस्य मन्त्रं गमयति तन्मन्त्रं चिन्तयित्वा तन्मन्त्रं नृपस्य मन्त्रं गमयति

सर्वकालेश्च ११ पूर्वाह्णपिर्द्यौतकताम्रकाशौ भूयै कविं सैश्वर्यं गमास्यः स्वाती विषाखं द्रु
जंगमानां नाद्योनिधिं धामनुसंमिताश्च १२ पूर्वार्धमाग्नेयमवाग्नित्वा तन्मन्त्रं चिन्तयित्वा तन्मन्त्रं नृपस्य मन्त्रं गमयति तन्मन्त्रं चिन्तयित्वा तन्मन्त्रं नृपस्य मन्त्रं गमयति
समस्तमन्त्रं चिन्तयित्वा तन्मन्त्रं नृपस्य मन्त्रं गमयति तन्मन्त्रं चिन्तयित्वा तन्मन्त्रं नृपस्य मन्त्रं गमयति तन्मन्त्रं चिन्तयित्वा तन्मन्त्रं नृपस्य मन्त्रं गमयति तन्मन्त्रं चिन्तयित्वा तन्मन्त्रं नृपस्य मन्त्रं गमयति
शभाजीवपज्ञैः प्रतश्चापि भोग्याः ॥ तदा कांतमं कर्तरी संज्ञमुक्तं ततो जेन्दुसंज्ञं भवेत्तस्मात् १४ स्व
भार्तुं मृतपक्षजो हि मकरोश्चेत् जीवपक्षैः शभायाः तस्यादिपत्री तगेष्टयकरीति जीवपक्षैः शभायाः
तन्मन्त्रं चिन्तयित्वा तन्मन्त्रं नृपस्य मन्त्रं गमयति तन्मन्त्रं चिन्तयित्वा तन्मन्त्रं नृपस्य मन्त्रं गमयति तन्मन्त्रं चिन्तयित्वा तन्मन्त्रं नृपस्य मन्त्रं गमयति तन्मन्त्रं चिन्तयित्वा तन्मन्त्रं नृपस्य मन्त्रं गमयति
लास्यः सूर्ये दुमंदगुणवश्च कुलाकुलाजो मूलां वृषे विधिं मंदसंघर्षं दिति १५ पूर्वार्धे चिन्तयित्वा तन्मन्त्रं नृपस्य मन्त्रं गमयति तन्मन्त्रं चिन्तयित्वा तन्मन्त्रं नृपस्य मन्त्रं गमयति तन्मन्त्रं चिन्तयित्वा तन्मन्त्रं नृपस्य मन्त्रं गमयति
वेदकुर्गोदहनदी सेंद्रचित्रास्तथा शुक्राने कुलसंज्ञकाश्च त्रिषोके न्द्रोद्वेदो मता ॥ यादयि स्या
दकुं जयि स्यात्तद्वत्कुले संज्ञि स्यादुभयोः कुलाकुलगुरो भूमी संयोर्युध्यते ॥ १७ ॥ सूर्य
मंदपुण्याय गवसुजलपक्षि शमे त्रापयथा यो साम्यं जां विद्रु करार्गदिति पितृपवतो उत्पथो
भानिका मे वन्त्यादा विविचित्रा न्ति मर्तुं गमयति तन्मन्त्रं चिन्तयित्वा तन्मन्त्रं नृपस्य मन्त्रं गमयति तन्मन्त्रं चिन्तयित्वा तन्मन्त्रं नृपस्य मन्त्रं गमयति तन्मन्त्रं चिन्तयित्वा तन्मन्त्रं नृपस्य मन्त्रं गमयति
जीतिपण्यादि न हो ॥ तन्मन्त्रं चिन्तयित्वा तन्मन्त्रं नृपस्य मन्त्रं गमयति तन्मन्त्रं चिन्तयित्वा तन्मन्त्रं नृपस्य मन्त्रं गमयति तन्मन्त्रं चिन्तयित्वा तन्मन्त्रं नृपस्य मन्त्रं गमयति तन्मन्त्रं चिन्तयित्वा तन्मन्त्रं नृपस्य मन्त्रं गमयति

रापेंद्रविस्मयिनाम

नैपरीत्येन कालोपात्रे कीर्त्तयेत्संस्कारपात्रम् ॥ ३५ ॥ नात्रैवेतौ वैपरीत्येन गण्यौ पात्रापेक्ष
 मुरेवर्जनीयो ३५ पूर्वादिषु चतुर्दिशु सप्तसप्तान्तवर्जितः ॥ व्याघ्रव्याजते प्रदिगसंस्थे पा
 त्रिधं नीविलंबयेत् ३६ अग्नेर्दिशं नृप इमात्पुनरुहतादिग्मे त्रैवंप्रदक्षिणरागतौ विदिशेथ
 ३६ कल्पे ॥ आब्रस्य कौपिपनिधं प्रविबं विदिशेत्स्वर्लो विहाप्य पीदयेत् नृसंविस्ती ३७ मैत्रा
 कपुष्याश्विनभौनिनुत्तापात्राश्रमासैर्वादिशा सुपरिणतेः वज्रीग्रहः केंद्रज
 नोस्यवर्जितगते दि नवास्पगमेर्निषिद्धम् ३८ सौम्यापनेसंस्पृष्टविधु
 तदोतत्रांप्राचीव्रजेतौ पादिदक्षिणायने ॥ प्रत्यग्गमात्तपोर्दिवा नि सा
 संभिन्नापनत्वेथवधो न्यथा भवेत् ३९ न कास्तनी चोपगते षट्जोः सूतेरा
 जावृजं न्याति वशं रिपूरा म् ॥ वधो लुक् नोपदितत्र संनरनिपु जयेन्नैव जपप
 लौडुजे ४० पावर्धद्रः पूषा भा कृत्तिका घे पादेश्चो न्वो नदुष्टा गदनेः ॥ मध्ये

व
 न
 स
 न
 व
 न

नृप१द्य२द्य४जि३भू१राजि३द्य२न्य३द्य४वि६पुगा४जनय३॥४

[illegible]

थराहः शनिः शशी इत्युत्पत्तिश्च ॥ प्राच्यादितो दिनु विदिनु चापि दिशामचीशाः क्रम
 तः पूर्वदिग्माः ४८ केन्द्रे दिग्धशिगच्छेदवनीशः ॥ लाटिका नितस्मिन्नेपादप्रसेतां ४८ प्रा
 च्यादौ तेन शिस्तनो मगसुतो त्वामेव्यर्षेते सुतः कर्मस्थो यतमैर्न बाह्यं मगहेसो विस्त
 या संप्रमे ॥ बंद्रः शत्रुं गृहात्मनेपि च बंधः पाताय गोजीव्यतिर्विलेभ्रात गृहे विभुते
 ३२ दना लाटिकाः कीर्तिताः ५० मगे गत्वा शिने स्थित्वा दितो गच्छत जपे द्विपु तमे
 त्रैप्रस्थापशात्रे चास्थित्वा भूत्वे व्रतस्तथा ॥ प्रस्थापहस्तेनितलजधिले स्थि
 त्वा जयार्थी प्रवसेद्विदैवे ॥ वस्वत्यपुष्येति जसीमूचैकं प्रात्रोचितः ॥ मालभते न
 ३७ नीशः ५१ उषः कालो विना पूर्वो जोधमिः पश्चिमां विना ॥ विलोतनां निशोधः सन्पाने
 प्राम्यं विना भिजित परं नृपता म्नाजः क्रमादेह कोशे धौ नुक्क बह नमः ॥ मर्त्ये नौरि
 गी आश्वत्थं व्यापात्रं जप्यताः ५३

अ १

मौ ^जगत्सोपि राजातावतिष्ठे संमुखत्वेपितस्य ४१ कुंभकुंभोशकोत्याज्योसर्वथा
पलतोवुधैः॥ तत्रप्रपातर्त्तपतेर्यनाशः पदेपदे ४२ जतित्वग्नजन्मभपतीशभग्न
हौभनेतंदुःखदयेशभोगप्रः॥ अथमीनलग्नउतवातदंशकेचलितस्यव
क्रमिहवर्त्तमायते ४३ जन्मनाशितनुतोष्टमेथवास्वारिभाच्चत्रिपुमेतनु
स्थिते॥ लग्नगगनदधिपोपदाथवास्पुर्गतं हिन्यतेर्मतिप्रदम् ४४ लग्नेचंद्रेवापिबर्गे
तेमस्थेपात्राप्रोक्तावांग्दितार्थेकदात्री॥ अभोराशौवातदंशेषुशस्तनौकापानेसर्वासी
दिप्रदापि ४५ दिग्घातंभेलग्नतेप्रशस्तायागार्थदात्रीजपकात्रिणीच॥ हानिंविनाशं
त्रिपुतोभयंचकुर्यात्तथादिकप्रतिलोमत्वग्नते ४६ नाशिःस्वजन्मसमयेसुप्तसंयुते
योयःस्वाभिभान्निधंगोपिचवेशिसंज्ञः॥ लग्नोपगःसगमनेजपदोयभूपपोमेज
मोविजपदोमुनिभिःप्रदिष्टः ४७ सूर्यःसितोभूमिसूतो

श्रीगणेशाय नमः ॥ सुतोपि लोभदशमे ॥ त्रिनाभरीपुत्रेषु तृतीये गुणज्ञे भग्ननास्तथावलपुताः ॥ ६२ ॥ सम
 ॥ देयगेविबुधगुणोमदनगतेहिमकिनरो ॥ हिबुकगतौबुधभृगुजौसहजगताः ॥
 ॥ त्वरेवचनः ॥ ६३ ॥ त्रिदशगुणस्तनुगोमदनोहिमकिनरोरविनापुगतः ॥ सितशशिजावपिन
 ॥ सजतोनाविसुतभूमिसुतोसहजे ॥ ६४ ॥ देवगुणोवाशशिनितुवासत्रनाथेनपुत्रमवैजस्य ॥ पंचमजोहोहिमक
 ॥ नपुत्रः कुमारीशोनिःसुहृदि ॥ ६५ ॥ सितश्च ॥ ६५ ॥ हिमकिनरासुतोवलीवेतनोत्रिदशपातगुणो ॥ केदस्थि
 ॥ तः ॥ व्ययगुहसहजापरिर्वमस्थितोपाटिचमर्वातनिर्वलश्चंद्रमाः ॥ ६६ ॥ अश्वभरवगेर्नवाद्यमदस्य
 ॥ हिबुकसहोदनराभगहस्थः ॥ कविप्रिहकेद्रगगीष्यतिदृष्टोवसुचयलाभकरः खलुयोगः ॥ ६७ ॥
 ॥ निपुलग्नकर्महिबुकेशिजेपविबीजितेशुभनभोगमनैः ॥ व्यपलग्नमस्तुगुहसुजयः पविब
 ॥ जितेवशुभनामध्वजैः ॥ ६८ ॥ लग्नेपादिजीवपापापदिलाभेकर्मरापपिबेदो ॥ जाविगमस्यात
 ॥ नेबुधशुकोबेद्रोहिबुकेवातदत्परत्तमुनैसर्वमृतिवयैः ॥ ६९ ॥ निपुलग्ननिधनेशुभजोबेदकोत्प
 ॥ यबुधभृगुजौतूर्यगेहस्थितौ ॥ मदनप्रचनगश्चंद्रमावांबुगः शशिसुतभृगुजोतर्ग ॥ तश्चंद्रमा
 ॥ सितजीवभौमबुधभानुतनजास्तनुमन्मथानिहिबुकंत्रिगुहचेतः ॥ क्रमतोदिसोदयस्वशात्रवहो
 ॥ नोहिबुकायगेगुणदिनेरिबलवेदे ॥ ७० ॥ सहजेकुत्रेतिधनजश्चभार्जोमदनेबुधोनविर्यैर्नो
 ॥ गुणः ॥ अथचेत्पुनित्यसितभानुजलंत्रिगता

केंद्रे कोरो सोम्य खटाः शभाः स्युर्ध्या नौ पापास्त्रिपा निषट् खेषु चद्रः ॥ नेच्छेत्तु तं त्यारि न
धेशानिः खेस्ते शक्रोऽनघो त्वानिरंध्रे ॥ ५४ ॥ योगासिद्धिर्धनशायनी नाम नगुरो
पि भूदेवानां ॥ चौ नाराणामपि शकुनैरुक्ता भवति मुहूर्ता दीपमनुजाताम् ॥ ५५ ॥
सहजे रविर्दशमप्रे शशी तथा शनिमंगलौ निपुण्ये ही सतः सुते ॥ हि बुके बुधो गुनपी
ह लग्नगः स जपत्यरीत्यर्चयितोऽचिरान्तपः ॥ ५६ ॥ भ्रातृनिशैपि भूमिसुतो वैदि
रिणालग्नैर्देवगुणः ॥ आग्रगतेर्केशत्रु जयं विदन् कुलोदैत्यगुणः ॥ ५७ ॥ तनौ जीवद
न्दुर्मलौ वै निजोर्कः प्रयातो महीन्द्रो जयत्येव शत्रून् ॥ ५८ ॥ लग्नगतः स्याद्विजयपुत्रो धावा
मधनस्थेः शेषतमोर्गैः ॥ घृते मंदे स मुदपुर्गैर्जीवेशु क्वैविदि मधनस्थे ॥ इह ग्वाजे
चलति न त्रेन्द्रो जेता शत्रून् लग्नगुण्ड इवाहीन ॥ ५९ ॥ वित्तगतः शशीपुत्रो भ्रातृनिवासन नाष्टः
लग्नगते भद्रगुणैस्सुः शलभा इव सर्वे ६० ॥ उदये न विपदि शोनिर्नागः शशीदशमपि ॥ व
सुधापातिर्पदि यतिमिषवाहनी वशमीति ६१ ॥ तनौ शनि कुजौ रविर्दशमप्रे बुधो भगु

36

39

नापितथाभावाच्चव्यं दधित्वा त्र्यं दुःखमथेरा मांसमपयंतस्यैव नक्तं तथा ॥ तदत्यापसमे
 वेचामपललं मां चि शशं तथा भाषि क्यं च प्रियं च पूषमथा वा चित्रा राडा जालं सत्फलमप
 कौर्मिशानिक गो धिकं च पललं शात्यं हविष्यं हपाद्य जे स्यात्कृशत्रा न्न मुद्रमपि वापि श्य
 वानो तथा ॥ मत्स्या न्ने खलु चित्रे तान्न मथवा दध्य मेवं क्रमाद् न्या मन्त्य मिदं विचार्य
 मतिमान्न जे तथा लोकयेत् ॥ ८१ ॥ अज्यं तिलोद नं मत्स्यं पयश्चापि यथा क्रमम् ॥ भोजये
 दोहदं दिश्य मां शो पूर्वो दि को व्रजेत् ॥ ८२ ॥ नमालो पाप संको जीं श्रु तं दुःखं तथा दधि ॥ पयोश्च
 तं तिलान्नं च भोजयेद्वा न दोहदं ॥ ८३ ॥ यजादितो र्क दे ल तं तु ल वा विसर्पिः आशा हविष्य मपि ते
 मजले त्वपूये ॥ धृत्वा व्रजे द्बक मं बु च धेनु मूत्रं च पावान्न पाप सगुण तूनु चित्रांश्च मुद्रा त
 उच्च त्य प्रथम तूर्य दाने रां वि द्वा त्रि शत्य दे मा भ्रं जी ॥ ८४ ॥ आत्रो ही तिल वृ त्तं ह म
 ताम्पात्रे दत्वा दोगरा क व र्ग म च गे ह्यत् ॥ ८५ ॥ प्राच्यां गे ह्ये द्दु जे नै व द नि रा स्या रथे न च ॥
 दिशि प्रती च्या मश्चे न ल यो दी च्यां न त्रै र्त्त पः ॥ ८६ ॥ देव गृ हा द्वा गु तु सद ना द्वा स्व गृ हा
 द्वा तो ह्ये ना मा ॥ ९

हिशोमिः उधियौ निपुस्थितौ ७२ स्को ज्ञेयसितेषु पंचम तपः केंद्रेषु योगेस्तथा द्वौ चेतेष्वधिवे
 गस्युसकलाः योगाधियोगः स्मृतः ॥ योगे ज्ञेयमथवाधियोगगमने ज्ञेयमपि पूर्णवधं
 वाथो ज्ञेयमसौ वनोश्चलभूतेषां योगाधियोगे वृत्तम् ॥ ७३ ॥ इष्टमांससितादशमीविजयाशुभ
 कर्मसुशुद्धिकरी काथिताप्रवेशार्जे पुतासु तत्रांशुप्रदानपतेर्गमने ज्ञेयसिद्धिकरी ॥ ७४ ॥
 चेतोनामि तशकु नौतिसुप्रशस्तैर्जीवाविलग्नवलमुर्व्यधिपः प्रपाति ॥ सिद्धिर्भवेदथ पुनः
 शकुनादितोपचेतो विसुद्धिरधिकान् चलां विनेपात् ॥ ७५ ॥ व्रतबंधनैर्देवतैर्प्रीतिष्ठाकर
 ॥ पीठोत्सवसूतकासमाप्नो ॥ न कदापि च त्रैदकालविघ्नं न वर्षा तु हिनेपि सप्तमात्रं ॥ ७६ ॥ मही
 ॥ पतेरेकदिने पुनात्पुनरेपदा भवेतां गमनप्रवेशकौ ॥ भवानश्लप्रतिशुक्रयोगिनीर्विचजपेत्तै
 ॥ वकदाधिपांडितः ॥ ७७ ॥ प्रवेशानिर्गमं तस्मात्प्रवेशनवमेतिथौ ॥ न ज्ञेयं च तथा वा नेव कुर्य
 ॥ कदाचन ॥ ७८ ॥ अग्निं हुत्वा देवतैर्पूजयित्वा नत्वा धिप्रानैर्पिदिगीशम् ॥ दात्वा दानं
 ॥ ब्राह्मरोभ्योदिगीशम् ॥ ध्यात्वा चित्तं भूमिपालोभिगच्छेत् ॥ ७९ ॥ कुल्माषोत्तिततंडुला

१५

॥४०॥

४०

तिपदिनेत्यगुह्यपपक्वमांसानि॥ विनिवर्ततेसंज्ञः स्त्रीदिनमपमन्य गच्छति॥ विम
 योऽयं पादमासु चतुर्षुपेषमासादिष्वर्चिः॥ प्रवेदकावर्चिः॥ पशुमत्यपदा
 कितानपादसुधास्यान्निहतावदेवदोषः॥ ८५ मूत्रापांश्चोदोषोऽस्योभयस्यादोषो
 भ्रष्टान जीमूतानां दोषो रश्मिर्वाजाता॥ प्रादोभूयः॥ ८६ सूर्येदोर्विम्बेसौवर्गो
 कृत्वाधिप्रेष्योधातः दुःशाकुत्येसायंस्वरीदत्वागन्तेत्स्वन्तामिः॥ ८७ विप्रैश्चैव
 परतैर्निदुग्धदधिजोसिद्धार्थयाम्बरवेश्यावाद्यमपूरा चोषानकुलंवेद्येकपु
 श्वाभिषम॥ सद्यःकपंकुसुमेजुपरीकलसाक्षात्तमत्कृत्यकारतोस्त्रीषासिते
 क्षप्रघससुतस्त्रीदीपवेशाननरा॥ ८८ आदर्शाजनधौतवस्त्रजकोमीनाज्यासिंहास
 नंशावं मोदनवर्जितं ध्वजमधूजागास्त्रा जात्रोचनं॥ भारद्वाजोत्पानवेदनिनक
 मंजुल्यंगीतोकुशादृष्टा=सफलदाप्रकानसप्रवेरिक्तोचिदः=स्वैरुगः॥ ८९ वन्या
 यमामृतकस्थिसर्पलवणं गृहेत्यनन्वी वनिवर्ततेत्येवमातवसेवैरिजदिल

दशा

वे३

धा१

नमस्कृत्य तत्र गृहाद्वा प्राशपहविष्यं विप्रानुमतः पश्यतश्च रावत्सङ्गुलप्रीयात्तच्छाकार्याये
 प्रहजामनस्ये चोदिलस्यो भूदेवादिभिः उपवीतमापुष्पं च ॥ नौद्रं चाप्रलफलमासु चालनीयं
 सर्वेषां भूजतिपदेव हस्तिपं वा ॥ ८८ ॥ गेहं होतयमापेजमस्तर्हि धात्रेति गर्जः सीतः सीमांतर
 मपि च वीशाविलोप्य मात्रमप्रास्थानस्याऽदीतिकथयते ; यथा यद्वा जय वं पात्राका
 यो वीहिरुपुत्रास्या वीशयो वीत ॥ ८९ ॥ प्रस्थानमधनुषांश्चिंशतानि पंचकेचिच्च तदप
 मुशान्तिद्वेवान्येऽसंप्रस्थितोपद्रुमं न्दिरतः प्रप्रेति गंतव्यं दनु तदपि प्रयतेन का
 यो ॥ ९० ॥ प्रस्थाने भूमिपालो दशदिशो प्रभो व्याप्य नैकं जतिं छेतसामंतः सप्तत्रात्रं तादित
 नमनुजापंचत्रात्रं तथैव (उद्धि गद्धे च) भो ह सथगमनादिना सप्तत्रात्रं च पूर्वचेशं तादित
 नैवैवैषु विजयमना प्रैथुतं नैव कुपोत ॥ ९१ ॥ दुग्धं त्याजं पूर्वमेवं त्रिना तदौ न त्याजं पंच
 त्रैव पूर्व ॥ नौद्रं तैलं वा सयेस्मिन् वमिच्च त्याजं पत्नाभ्यामपालेन नमः ॥ ९२ ॥ मृत्तागच्छे

३ निप्रचो१ वासुदेव

॥४१॥

५॥

जेर १०६ पात्राणि च तौ श्रुतं प्रवेशनं मधुवैः पुनर्गमः ॥ दीप्तिं न लेदानुराग्रेतयो ॥ उपरे
स्त्रीरुपत्रात्मविनाशनं क्रमात् १०७ अप्रपन्नं दर्शनासतिथिः कौवासनोद्भवो सप्तसप्त
स्वाशितं अदिक्रमाः ॥ १०८ वक्रतादिपरिवादि काचतु जाघशौचमापि चोत्सवादीक
१०९ मृतपक्षिणो न विनर्क संख्यका निग्रथपक्षशोनि न वि भौम वासना ॥ श्रीपिवा
पृष्ठगविधुस्तथाऽलोचसुपंच कामिनि दथापि दनिरो १०९ लज्जे जन्मादौ तन्वो मि
ति गुरुमहितं कौश्वषष्ठ तदीशवा लज्जे कुं भर्मानुर्दानं नयत्तु नूना बोपि छोदयं च पद्य
शासस्थम द्वादशमासनि नथो सप्तमे वक्रतादिपरिवादि काचतु जाघशौचमापि चोत्सवादीक
विनाहो न दोषाश्च नेष्टा ११० ॥ इति श्रीदेवज्ञानंत सतदेव ज्ञानाभिवर्चिते म
हर्षे चिंतामणौ पात्राप्रक नराम ॥ १११ ॥ अथ गुरुप्रक नराम ॥ पद्मघं कशुते शदिम त
मशो ज्ञानः ११२ मोनाम प्रस्व वर्गादि गुरां विधापय वर्गा ॥ ग ज्ञे शेषितं ॥ काविन्यस्वनयो
श्चतवि विदलोपसाधिकः स्वदोयनारं ॥ दिवैश्च शय नपयासै नाहितः पूर्वतः ॥ ११॥ गो

धं वि न व्यं

चतुर्वाते नैव्याधीताः नगनाभ्यक्तविमृक्तकेशपतितं व्यङ्ग्यं क्षुधार्ता अस्वकस्त्रीपुष्प
 सगठः स्वगेदहनं मैर्जनैपुङ्गवस्तम् १०० कार्यप्रीण्यतः कपेन विधावाकुदुम्बेर्वात्तवस्त्रादेः
 स्वयत्नं लुत्वापसमं लस्मानि धान्यानि च ॥ कार्या सर्वमनंगदभरवो विज्ञोति नु ॥ गु
 र्भिनी मुद्रादाम्बुदुर्बो धवधिनादुप्यानदध्य शुभाः १०१ गोधाजाहकशकनाहिशशका
 नां कीर्तनां शोभरां नोशाब्दो न विलोकने कपिनि जाततो व्यस्यपः न पुनर्न मथ प्रवेश समये
 नव्यार्थसंविदो नैव्यस्तः शकुन्तलपे नराधिधोपत्रोदितो शोभराः १०२ वामदे कीर्ति
 त्वापक्षोपलकी सूक्यो न तपिगला दुष्ट काश्रेष्ठः शिलापुरुष संयुताः १०३ जिह्वः
 पिङ्गलो भासश्री के नो वानरो नु स्त्रीसंज्ञका कर्माश्चैस्मृर्नजरोः १०४
 प्रदादि रागतं श्रेष्ठपात्राय प्रगप्यजिराः श्रोतृमृगवैतो तिधान्यावामेखन स्वनः १०५
 आद्येपि सकुने स्थित्वा प्राप्तेनेका दशाव्रजेतुर्धितो विप्रशंप्राणतनीपेन कचित् व
 पेज ३ ले: ३

मनोवमं॥ सुमुखं दुर्मुखः क्रुन्विं दं धृतं दं दं पंचाक्रन्द विपुलं विमपै र्वं
 तथा क्रमात्॥५॥ तथ्य कीर्षिं गैरुद्रशके नामाक्षरं त्रपं प्रद्य धीर्लक्ष्मिदं
 किं विश्वेषु देतं गोधपः॥१०॥ पिं नैवां के पुगजा गितं नागा धिनागे गुरी ताक्रमे
 रा॥ विभाजिते नागजगतां के सुधं नाग देतिथ्य क्षत्रवभातुमिश्च॥११॥ अप्रवशांशको
 द्रव्यं प्रनम दोतिथिर्पूतिः॥ आयुश्च य गहे स च्छे ग्राभैक्यं मतिप्रदम्॥१२॥ गेह
 धारं मेऽर्कं भाद्रस सीर्ये गामैर्दाहा नद भैर गपदेशं न्य वेदैः पठ पादस्थित त्वं यामैः
 पठे श्रीपुगेर्द भकु दौ॥१३॥ ला भोना मैर्युगैस्वामिना शोवेदैर्नैस्वानामकु दौ
 मुखशेथैः नामैर्पोप्र संततं चार्क धिस्माद श्वेनुदैर्दिग्भिनुत्तं त्यऽ सत्सत्॥१४॥ कुं
 मेऽर्कं फाल्गुरो प्रागपम मुखगहं ग्रा बरो सिंहक केर्षो धौषे न के च पा म्प्रात नम
 विसदने गार्कि वनाधे ॥ मागे जैकालिगेह सधु व म दुवनुरा स्वाति वैश्वर्क पुच्छे ॥
 शुतिगेह त्वदि यं रा भि विधि भपो ते नशसः पवेशः॥१५॥ कश्चि लोष नवौ म

॥५॥

५२

हतादितिथ्योन्योनितः व्याप हतदुतागद

सिंहनक्रमिथुनां निवसेनेमख्ये गमस्यैवैककुः भौलफषां दुनाचकको धनुः तुला प्रमे
 षवराश्चतदं जस्य प्रचमपराधीनस्युत्रैः ॥२॥ संकोनितेहर्जं युक्ता धानैश्चापिपु
 ताविभैः तां भूपाश्विभिः शेषमिति हिं प्रीः ॥३॥ स्वेष्टापनक्षत्रप्रः धवोः श्वदेवैर्ह
 स्याद्विस्तृतिर्विस्तृतिर्हचदीर्घताम्रपेक्ष्ये जोधुम्रहनिस्व जेवने भक्ष्यं दोकं पिंड इहा
 छेशेषिते ॥४॥ चैजादिकाः सवर्गदिशि चैते मुखे कर्पीहरो पूर्वपमो प्राच्यां वषे प्राग्गम
 प्रोर्गजेः थवापश्चादुदके पूर्वपमो द्विजादितः ॥५॥ जहेत्स्त्री शर्यावता नाशोऽर्के
 बुदीज्यशत्रेविवलेऽथनीचे ॥ कर्तुः स्थितिर्नो विधुवास्तु नो भैः पुनः स्थितो पृच्छते
 धनिं स्यात् ॥६॥ भन्नागतलक्षं अप्रनीतो शो ध्रुवादि नमं क्षत्र पुं क सपिंडः तद्ये ध्रुवा
 पुरोः विदूकता न्तभूपाश्च शा भवे पुर्नश भोऽतकोऽत्र ॥७॥ दिनु पूर्वदिनः शौलो मघा
 ध्रुवां क सप्रो गसैको वेशम ध्रुवादि क ॥८॥ ध्रुव धाव्य जय नन्द खत्र को त
 तत्तागताश्रया

विष्णुऋशनेश्वरेषु च नान्येषामिन्द्रश्चैव त्रिजेषु ॥ स्थितिः शतं स्यात्तदासिता करे
ज्येतेन त्र्यम्बु सुते सते द्वौ ॥ २॥

॥४३॥

॥२२॥ लग्नां चरापेषु भृगुर्जभानुभिः केन्द्रे गुणवर्जशतापुरा लप्यं वंधौ
गुणोऽप्योमिश्रशिशिकुजार्कजौ लाभेलक्ष्मीति शतामृतप्रपम ॥ २३॥ स्वेष्टे शुक्ले लग्ने
वागुप्तौ वेशमगते अथवासनौ स्वेष्टे लाभजे बालक्षीसु तं चिरं गृहं पूताम्बरे पदे
कोपिपत्रांशस्यो गृहो गृहं ॥ अथांतः पत्रहस्तस्य कर्प्या चैव राशिः ॥ २४॥
पुण्यधुवेदुहसि सर्पजलेः सती चैव सप्तदशरेचकृतं शतगणं दंसत ॥ २५॥ सात्रे कवेऽय
न्तमबाम्बुमूलैर्दिने कुजे वनि बेशाग्नि सुतार्तिदं स्यात् ॥ सजे कदा स्यात्प्यमृतं ह
स्तैर्जस्ये च वात्रेशु स्वपदं स्यात् ॥ २७॥ अत्रैव पादहिवेधु शक्रमिना द्यांतकैः ॥

॥४३॥

दौ २
लि १

अथ अत्र विचारः पूर्वत्यको बहिरुक्तो धनदश्चोत्तरस्य चः घाम्यां रोगप्रदो ज्ञेयो ज्ञे
 च नहा पृष्ठे वृत्तः
 धौ ब्रह्मभगो ज्येष्ठशुक्रो कर्कटे प्राद्वे सिंहगते धौ श्वपुत्रि चो जौ तुल्यौ तथा धौ षके ॥ प्राचेन ज
 धौ श्मानि गदितं गहनं थोर्जनसत्क त्यापां च तथा अनुब्रूयि च नो लोमादिमासाभ्य
 वेत् ॥ १६ ॥ पूर्वोत्तुतः प्राग्बद न नवम्यादिषु तत्र स्यं नथ पश्चिम स्यात् ॥ दशोदितः
 श्च कदले नवम्यादौ दानि रास्यं न श्च प्रवृत्तिः ॥ १७ ॥ भौ मार्के निक्ता माघे नव नो न गि वि
 पंचके ॥ व्यं नैस्ये श्च भौ गे हात्रं प्रसूपां निगैश्च तैः ॥ १८ ॥ देवा लपे गे हवि धौ ज
 त्यासं पे त्राहो मुखं शौ दिशो विलोमतः ॥ श्री नार्के सिंहार्के प्रगार्के तीस्रं भेरना तो मुख
 पृष्ठे विदीर्ष श्चो भवेत् ॥ १९ ॥ कूपे वासो र्मध्यदशे ॥ र्थे न सैस्ते शानादौ पुष्टि र्
 श्व यै वृद्धिः नीसैः सूनाः सि विनाशा प्रतिश्च संपत्त्या शशु तश्चाति सोम्य ॥ २० ॥
 अज्ञान स्य पाकशपना सुभजे श्च बान्धनं प्रगये दत्त गृहं निच पूर्वतः स्युः ॥ तत्त स्य
 तस्त्वमथिना ज्येष्ठु नीषा विधाभ्यासाख्य यो दत्त न तोष ज सर्वधर्म ॥ २१ ॥ जीवार्के

नवम्यां गे हवि धौ ज
 त्यासं पे त्राहो मुखं शौ दिशो विलोमतः ॥ श्री नार्के सिंहार्के प्रगार्के तीस्रं भेरना तो मुख
 पृष्ठे विदीर्ष श्चो भवेत् ॥ १९ ॥ कूपे वासो र्मध्यदशे ॥ र्थे न सैस्ते शानादौ पुष्टि र्
 श्व यै वृद्धिः नीसैः सूनाः सि विनाशा प्रतिश्च संपत्त्या शशु तश्चाति सोम्य ॥ २० ॥
 अज्ञान स्य पाकशपना सुभजे श्च बान्धनं प्रगये दत्त गृहं निच पूर्वतः स्युः ॥ तत्त स्य
 तस्त्वमथिना ज्येष्ठु नीषा विधाभ्यासाख्य यो दत्त न तोष ज सर्वधर्म ॥ २१ ॥ जीवार्के

ज्वदनादिप्रदिग्वापूरीतिथौ प्राज्वदते गतेऽप्रोतं दादिके पाप्यज्ञलोत्तरेति प्रापाव
 के भूतविधास्यवेशसमयेकुं भोजिदाहः कृताप्राच्यामुधसतं कृतायप्रगताया प्रः के
 तापश्चिमेष्ट्रोवेदाकलितुत्तरेपुममितागमैर्विनाशोऽदेनामस्येयमस्तस्थितात्वमन
 लकेठे प्रवेत्तावदा ॥ ६ ॥ एवं सै लगे सुगहं प्राविशयवितानयुष्मप्रतिबोधपुत्तं सि
 ल्ये ज्ञदेव जेचिधि जेपात्रानमा लं च पेद्युमिहिन न्यवसे ॥ ७ ॥ आसिधमपुत्रेवदनि
 जमप्येति जैर्मदिते ॥ ज्योतिर्वितिलकः फरींद्रयचितोभाष्येकतालिश्रमः ॥ तत्तज्जै
 साहितागरिा तक्तन्मत्योमहा भूतुजां तकोलं कतिवेदनाक्यविलसुधुकिः सचिंताम
 रीति ॥ ८ ॥ ज्योतिर्विद्वज्वंदीतैरि कबलसात्सूनवासित्कती तास्मातुत्त इति
 पुष्पाप्रधिगतोभ्रमंडलाहस्तनः ॥ योत्रम्य जनिपधतिं समनोदुष्योप ॥ ९ ॥
 नींठिं के चोममकामधेनुगरीतिर्काविसत्तापितये ॥ १० ॥ तदात्मुजउदा नधीवि
 पुध्वनिं जेभनुजोगरोसैजदकं जं हदि निधा नमोति ॥ गिनिलगतमेवनेचुजवने
 पुचंदैमि शके विनिगदादिप्रंखलपुहृत्तचिंतामरीति ॥ इति श्रीदेवज्ञातेतशतदैवतगामविगजिते

४४

44

संखत १८८
 सप्राप्ते ॥ संखत १८८
 चिंतामरीति ॥ संखत १८८

जशोवुष्यवशां नृप ज्ञानितवासवेषु नवसतस्तादिलिचानरात्र १३२
 संप्रदेर्मेदवानेस्यैव नृपो मूलपुतंग्रहा २८॥ सूर्य जीपु गप्पैसिनस्य थफरतं
 षमीसतः कोरागे नो गे नृदसतंततोगजमितेः साखा सुसौख्यं भवेत् ॥ देहत्यां
 गुराभैर्मेति गृहपतेर्मध्यस्थिते वेदभैः सौख्यं चक्रमिदं विजो क्य सुधिप्रा द्वात्रिं
 ध्वेषं सुभ्रम ॥ २८ ॥ इति श्री देवज्ञानंतसुतदेवज्ञानामविनचिते मुहूर्तं चिंतामरी
 वास्तुप्रकरणे कनराप्र ॥ २८ ॥ अथ गृहप्रकरणम् ॥ सौम्यापने ज्येष्ठते पांत्यमाध्व
 लेपात्रानि वतौ नृपतेर्न वेगृहे ॥ स्यादिसनं द्वास्थमदुधुवोऽग्निः जन्म दौलुनोपव
 पेदपोस्थिते ॥ १ ॥ जीर्णं गृहेऽज्योदि भविष्यि मार्गेर्ज्योऽग्निं वरिणोपि सस्यत् ॥ विप्रो
 खपे ज्ञानितवासवेषु नावस्य मत्तादिविचानतात्र ॥ २ ॥ मृदु ध्रुवदिप्रचनेषु मूलमेव
 सत्तार्चनं भूतबलिचका ॥ ३ ॥ त्रिकोराकेन्द्रापचनत्रिजैः शुभे ॥ सिद्धिपटलाप्रो
 पगतैश्च पापकैः शुद्धं पुत्रधेविजनुर्धर्मत्याज्यकीर्तिता चने चैत्रदर्शे ॥ अग्नेः पुरोकि
 लक्ष्मिदिताश्चरुवाविसिद्धे समभकृत् शुद्धम् ॥ ४ ॥ वांमृत्युसुतार्थलाभतेर्केपंचमेप्रा

सुत ३